

राजनीति भाषा

जिसको

आगरे के रहनेवाले श्रीलल्लूजीलाल कवि महाशय
अवदीच्य गुजराती ब्राह्मण ने संस्कृत हितोपदेश
का आशय लेकर ब्रजभाषा बोली में बनाया

जिसमें

पांचभांतिकी कथा, मित्रलाभ अर्थात् प्रीतिकराने
की रीति, सुहृद्भेद अर्थात् स्नेहछुड़ानेकी भांति
विग्रह अर्थात् युद्धकरानेकी चाल, संधि अर्थात्
मिलाप करनेकीयुक्ति, लब्धप्रणाश अर्थात्
वस्तुपाकर उसके खोनेका फल वर्णित है

दसवींबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई.) के छापेखाने में छपी॥
जौलाई सन् १८९४ ई०॥

मनुस्मृतिसटीकका विज्ञापनपत्र॥

सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का अग्रणी व सकल धर्मानुरागियों से पूजित यह मनुस्मृति ग्रन्थ जिसकी मान्यता व मर्यादाका विस्तार अच्छेप्रकार संसारमें है--यद्यपि इसग्रन्थके बहुतसे अनुवाद अंग्रेजी आदि भाषाओं में कियेगये हैं परन्तु इनमें से कोई भी ऐसा नहींहै जिससे प्रत्येक बातोंका समाधान सब कोई सुगमता से समझकर उसके तात्पर्यको जानलेवें इसकारण सम्पूर्ण धर्म कर्मानुरागियों व विद्याव्यसनविलासियों के उपकारार्थ व अलीगढ़ की भाषा संवर्द्धिनी सभाकी सहायतार्थ सकल कर्म धर्मधुरीण मर्यादापालनलीन पुरुषार्थीन गुणिगणप्रवीन सर्वैश्वर्य भूषित दोषादूषित उत्तमवंशी कुशाग्रयवंशी श्रीमान्मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) ने बहुतसाद्रव्य व्यय करके धर्मशास्त्राग्रगण्य सकलगुणिगणमंडलीमण्डन महामहोपाध्यायश्रीपण्डितमिहिरचन्द्रजीसे अन्य धर्म शास्त्र ग्रन्थों के तात्पर्यों से संवलित सारोंसे मिश्रित और सकलटीकाओं के रहस्योंसे युक्त उक्त ग्रंथका पदच्छेद अन्वय तात्पर्य व भावार्थसे भूषित अच्छेप्रकार देशभाषामें विवरणकराय मन्वर्थ भास्करनामतिलक मूलश्लोकों सहित लक्ष्मणपुरस्थ स्वयन्त्रालयमें मुद्रितकर प्रकाशित किया संसारमें यावत् कर्मधर्म चतुर्वर्ण अर्थात् ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र व चतुराश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यासादिके हैं सविस्तार इसमेंवर्णन कियेगयेहैं-इसकेसिवाय और भी सारे जगतका मूलअर्थात् जगदुत्पत्ति स्वायंभुवादिमनु,पितृगण,देवगणादिकोंकीसृष्टि धर्माधर्म विवेक मनुजी की उत्पत्ति व यक्ष गन्धर्वादिकोंकीउत्पत्ति व मेघ, पशु, पक्षी,कृमि,कीट,जरायुज, अंडज,स्वे-

भूमिका ॥

प्रकटहोय कि एक समयं श्रीयुत महाराजाधिराज गुणग्राहक जानगिलक्रस्त प्रतापीकी आज्ञासे श्री लल्लूजी लालकवि सहस्र अवदीच गुजराती ब्राह्मण आगरेवालेने श्री नारायण पण्डित रचित संस्कृत हितोपदेश की नीति कथा का आशय लेकर ब्रज भाषा में राजनीति नामग्रन्थ बनाय महाराजाधिराज सकल गुणनिधि लार्डमिण्टो तेजस्वी के राज्य में गुणज्ञाता उपकारी कप्तान जानविलियमटेलरन क्षत्रीकी आज्ञासे औरश्रीमान् दया-युत डाक्टरविलियम् हंटर साहब की सहायंता और लेफ्टिनेण्ट एब्राहाम लाकिट रतीवन्त की अनुमति से निज यन्त्रालय में छपवाया उसी को श्रीयुत महाशय विद्वच्छिरोमणि हालसाहब ने इंगलण्डीय विद्यारसिकों को ब्रजभाषाके उदगारार्थइंगलंडीय भाषा में कठिन शब्दों का कोष और परिभाषा सहित रचनाकर प्रयागराज के मिशनयन्त्रालय में मुद्रित कराया अब श्रीयुत विद्यागुणग्राहक विद्वद्वृन्दशिरोमणि महाराजाधिराज कौलिन् ब्रौनिंगसाहब एम० ए० अवधदेशीयडैरेक्टरवीरेश ने इंगलण्डीय विद्यानुरागियों को ब्रजभाषामें अधिकश्रम और उदगार करानेके निमित्त कोष को घटाय बढ़ाय हिन्दीभाषामेंही रचनाकर मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालय में मुद्रितकराया निश्चयहै कि अवध देशीय पाठशालाओं के विद्यार्थियों को राजनीति और संसारी व्यवहारों में अति उपयोगी हो ॥



राजनीति ॥

दोहा गजमुख सुखदाता जगत दुखदाहक गुणईश।
पूरण अभिलाषा करौ शम्भू सुत जगदीश ॥

काहूसमय श्रीनारायण पण्डितने नीति शास्त्रनि ते कथानिका संग्रहकरि संस्कृतमें एक ग्रन्थबनाय वाको नामहितोपदेश धर्‍यो सो अब श्रीयुतमहाराजाधिराज परमसुजान सब गुणखान भागवान कृपानिधान मारकिशवलिस्ली गवर्नरजनरल महाबलीके राजमें औश्रीमहाराज गुणवान अतिजान जान्‌गिलक्रस्त प्रतापी की आज्ञासों सम्बत् १८५९ में श्रीलल्लूजीलाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरेवाले ने वाको आशयले ब्रजभाषा करि नामराजनीति रख्यो ॥

दो० पण्डित हैं ते जानि हैं कथा प्रसंग प्रवीन।
मूरुख मन में मानि हैं लालकहा यह कीन ॥

अरु सम्बत् १८६५ में मोहिं श्रीमहाराजानिके राजा सकल गुणनिधान ज्ञानवान् जगत् उजागर दयासागर प्रजापालक गिलवर्टलार्डमिन्टो तेजस्वी के राज्य मध्य अरु श्रीनिपठ गुणज्ञाता महादाता उपकारी हितकारी कप्तान जानविलियम टेलरनं क्षत्रीकी आज्ञासों औश्रीमान् धीमान् दयायुत डाक्टर विलियम् हटरसहायक की सहायताते अरु श्रीबुद्धिमान् सुखदान लिप्टन् एब्राहाम्लाक्टरतीवंतके कहे सों वाही कविने राजनीति ग्रन्थ छपवायो पाठशालाके विद्यार्थी साहिबनिके पढ़वेको ॥

दो॰ ब्रजभाषा भाषत सकल सुरबासी सम तूल।
ताहिंवखानत सकलकवि जानिमहा रसमूल॥

या राजनीति के पढ़े सुनेते मनुष्य ब्रजभाषा में निपुणहोयँ अरु जितेक संसार के व्यवहार की बातें हैं तिन माहिं प्रवीण॥

प्रथम वा ग्रन्थमें ऐसे लिख्यो है कि जे चतुर हैं ते आपको अजर अमर समान जानि विद्या अरु धनकी चिन्ता करतुहैं अरु जैसे काहूकी चोटी काल गहेहोय ऐसो समझ वे धर्मकरत हैं पुनिऐसे कह्यो है कि सब पदार्थनमें विद्यारूपी पदार्थ उत्तम है क्योंकि अनहारकी देनवारी पुण्यमार्गकी दिखावनहारी अरुसदा चतुराईकीदाताहै जाकोभागी भाग न लैसकै अरुमोलनाहींक्षय नाहीं यह गुप्तधन है याको चोर ठग राजा छलकरि न लैसकै विद्या देतिहै नम्रता नम्रता पायेभयो सुपात्र सुपात्रभये मिलतुहै धन धन मिलेकरतुहै धर्मधर्म तें सुखीरहतुहै अरु जैसे नदी नारेको समुद्रलों पहुंचावै तैसे विद्याहूनरको राजातकलेजाय आगेजैसो वाके कपारमें लिख्यो होय तैसो फलमिलै शस्त्रविद्या औ शास्त्र विद्या ये दोऊ जगत् में उच्चपदकी देनवारी हैं पर वृद्ध अवस्था में शस्त्रविद्याको देखि लोग हँसतुहैं अरु शास्त्रविद्याते अधिकप्रतिष्ठाहोतुहै। ताते बालअवस्थातेलै वृद्धअवस्थालों शास्त्रसंग्रह करनो मनुष्यको उचितहै क्योंकि जहां पण्डित प्रवेशकरतुहैंतहां धनवान् नाहीं जायसकतु। तासों बालकनिके नीतिशास्त्र सिखायबेको छलकरि कथाकहतुहों क्योंकि शास्त्रमें प्रथमही बालकनको चित्तनाहीं लागतु। पुनि ऐसेहू कह्योहै जो विद्या बालअवस्थामें सिखाइये सो भूलतनाहीं जैसेमाटी के कोरेपात्रमें जो भरिये ताहीको गुण लहै याहीते पाँच प्रकारकी कथाकरि कहतुहों पहिली मित्रलाभ कहे प्रीति कराइबेकी रीति दूजी सुहृद्भेद कहेस्नेह छुड़ायबेकीभाँति तीजी विग्रहकहेयुद्धकरायबेकीचालि। चौथी संधिकहे मिलाप करायबे की युक्ति संग्राम ते पहिलेहोयकै पाछे। पाँचवीं लब्धप्रनाश कहे एक वस्तुपायकरि हिरायदेनी॥

अथकथाप्रारम्भ॥

दो० कवि बासी गृह कूपको कथा अपार समन्द।
तैसी ये कछु कहत हौं मति है जैसी मन्द॥

श्रीगंगाजू के तीर एक पटना नामनगर तहां सब गुणनिधान महाजान पुण्यमान् सुदर्शननाम राजाथा। वाने एक दिन काहू पंडित ते द्वै श्लोक सुने। तिनको अर्थ यह है कि अनेक अनेक प्रकारके संदेहूनिको दूरि करै अरु गूढ़ अर्थनि को प्रकाशै। ताते सबकी आँखिशास्त्रहै। जाहिशास्त्ररूपी नेत्रनाहींसो आँधरो है। अरुतरुणापन धन प्रभुताअविवेकता येचारों एक एक अनर्थ की करनहारी हैं अरुजहां ये चारोंहोयँ तह न जानिये कहाहोय यहसुनि राजा अपनेपुत्रनकी मूर्खता देखि चिन्ताकरि कहन लाग्यो कि ऐसेपुत्रभये कौनकामके जेविद्याकरहीन अरुधर्मसों रहित तेपुत्र ऐसे जैसे कानीआँखि देखिबेको तौ नहीं परदुखनी आवैतोपीरकरै। कह्योहै पुत्रताहीको कहिये जाकेजन्मते कुल की मर्य्यादहोय अरु योंतो संसार में मरके को नाहीं उपजतुहै पर सज्जन अरु विद्यावान् जोपुत्र बंशमेंहोतुहै सोपुरुषसिंहहै. जैसे चन्द्रमाते आकाश शोभापावतुहै तैसे वा पुत्रसों कुलजाकोनाम गुणीनकी गिनतीमें लिखनी ते नाहीं लिख्योगयोताहीकीमाता को बाँझकहतुहैं अरु दान तप शूरता विद्या अर्थ लाभमें जिनको यश नाहींभयातिनकी माताओंने केवल जनतेहीकोदुःखपायोहै पै पुत्रको सुखनाहीं देख्यो कहतुहैं कि जिनने बड़ेतीर्थनमें अति कठिन तप ब्रत किये हैं तिनकेसुत आज्ञाकारी धनवान् पण्डित धर्मात्मा होतुहैं ये छ· वस्तु संसारमें सुखदायक हैं सदाधनकी प्राप्ति शरीरआरोग्य स्त्रीते हित नारीमिठबोली पुत्र आज्ञाकारी अरु विद्यातें लाभ॥

इतनो कहि पुनि राजा बोल्यो कि मेरेपुत्र गुणवान् होयँ तौ भलो। यह सुनि कोऊ राजसभामेंते बोल्यो कि महाराज आयु

कर्म विन विद्या अरु मरण येपांचबात देहधारीको गर्भहीमें सिरजीहैं ताते जो भावीमें है सो बिनाभये नहीं रहति जैसे श्रीमहादेवजीको नग्नता अरु श्रीभगवानको सर्पशय्या तासों चिन्ता मतिकरो जो तिहारे पुत्रनिके कर्ममें विद्यालिखीहै तौ विद्यावान् होयँगे पुनि राजाकही यहतौ सांचहै पर मनुष्यको परमेश्वरने हाथ अरु ज्ञानदयो है सो विद्यासाधनके अर्थ जैसे एकचक्रकोरथ न चलै तैसे बिनपुरुषार्थ किये कार्य सिद्धि न होय ताते उद्यम सदाकरिये कर्म कोई आसरोकरि न बैठि रहिये कह्योहै कि जैसे कुम्हार माटीलाय जो कछु कर्योचाहै सो करै तैसे नरहू अपने कर्मसमान फलपावै कर्म तो जड़है वासों कछु न होय उद्यमकर्ताहै तासों कर्ता कर्मको प्रेरै तब भलो बुरो कर्ता कर्मके संयोगते होय अरु केवल कर्म कोई आसुरोकरि बैठिरहनो कपूतकोकामहै अरुजाके माता पिता सुतको विद्याको उद्यम न करावै तेशत्रुजानिये कह्योहै। कि मूढ़पुत्र पण्डितनकी सभामें शोभा न पावै जैसे हंसनमें बगुला न सोहै आगेराजाने यह बिचारि पण्डितनकी समाजकरि कह्यो हे पण्डितौ तुममें कोऊ ऐसोपंडितहै जो मेरेपुत्रनको नीतिमार्गको उपदेशदै नयोजन्मकरै कह्यो है जैसे कांच कांचनकी संगतिपाय मरकतमणिजनाय तैसे साधकी संगतिमें बुद्धिपाय मूर्खहू पंडितहोय अरु नीचकी संगतिमें नीच॥

दो० संगति कीजै साधुकी हरै और की व्याधि।
ओछी संगति नीचकी आठौं पहर उपाधि॥

तहाँ राजाकी बात सुनि विष्णुशर्मा वृद्धब्राह्मण सकलनीतिशास्त्रको जान बृहस्पतिसमान बोल्यो कि महाराज राजकुमार तो पढ़ाइबे योग्य हैं अयोग्यको विद्या न दीजिये क्योंकि वह पढ़ै तौ सिद्ध न होय अरु जो सिद्धहोय तौ अनीति विशेषकरै विद्याको गुणछांड़ै अवगुण दृढ़करि गांठि बाँधै ताते कुपात्रको न पढ़ाइये जैसे बिलावको नवोनवो भोजन खवाइये तौहू बिलरवेकीघात न तजै। पुनि कोटि यतनकरि बगुलाको पढ़ाइये

हौं दूजे वृद्धभयों ताते नख दांत अरु इंद्रियन को बलहूनाहीं अब मेरी प्रतीति क्यों न करै। कह्यो है यज्ञ वेद पाठ दान तप सत्य धीरज क्षमा निर्लोभ ये आठ प्रकार के धर्म कहेहैं ते पाखण्डी ते न होयँ हों तो आपने अर्थके लिये दियोचाहतुहौं अरु बाघ मांस खातु है सो मेरे नाहीं। पर न जानतुहै सो कहतु है जैसे कुटनी काहूको धर्मको उपदेश देइ तौहू लोक न मानै अरु ब्राह्मण हत्यारहू मानिये, ताते तू सांचो है मेरीदेह वृद्धभई अरु या कायाते मैं बहुतपाप कियेहैं यहसमझ सबपापतजिधर्मशास्त्र मैं पढ्यो अरु सुन्योहै। प्राणीको ऐसो चाहिये कि जैसो अपनो जीवप्यारो है तैसोही सबकाहूको जानै अरुचारप्रकारते दानदेतु हैं धर्मार्थ भयार्थ उपकारार्थ स्नेहार्थ सोनाहीं मैं केवल तोहिं दुःखीजानि देतुहौं श्रीकृष्णचंद्रनेहू राजायुधिष्ठिरते कह्योहै कि दान दरिद्रीकोदीजै तौ अधिक फलहोय क्योंकि औषध अरुपथ्य दुःखीको देतुहैं सुखीको नाहीं। अरु जो देशकाल पात्रदेखि दान देतुहैं सो दान सात्विकी कहिये। ताते ब्राह्मण तू सरोवरमें न्हाय आओ शुचिहोय दानले वाकी बात सुनि लोभकोमारेउ ज्यों वह सरोवरमें उतर्‍यो त्योंदवमें फँस्यो।जबकीचते पांव न काढ़िसक्यो तब बाघ हौलेहौले वाकी ओरचल्यो।ब्राह्मणकही अहोतुमकाहेको आवतुहौ बाघकही कि तू पानीमें ठाढ़ोरह। तोपै प्रयोग पढ़वाय कंकणदै स्वस्ति शब्द सुनौंगो यह कहत कहत पासजाय वाको फँस्यो देखि नरहटी धरी तब विप्र अपनेमनमें कहनिलाग्यो कि दुष्टको धर्मशास्त्र वेदको पढ़िबो कछुकाम न आवै क्योंकि आपनो स्वभाव कोऊनाहीं तजतु जैसे गायको दूधस्वभावहीते मीठो होतुहै कछु वाके खैवेपीवे ते नाहीं अरुजाकी इंद्रिय मनै बशनाहीं ताकीक्रिया ऐसे जैसे हाथीको स्नान उतन्हायो इतफेरि ज्योंको-त्यों।तातेमैंभली न करीजो बाघकीप्रतीतिकरी सबअपनेकुलब्योहारते चलतुहैं जौलौं यह बिचारकरै तौलौं नाहरने वाहिमारिभक्षणकियो। तातेहौं कहतुहौं कि बिनविचारे काम कबहूं न करिये॥

कुं० बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय।
काम बिगारै आपनो जगमें होत हँसाय॥
जगमें होत हँसाय चित्त में चैन न पावै।
खान पान सन्मान रागरँग मनहिं न आवै॥
कहिगिरिधरकविराय दुःखकछुटरत न टारे।
खटकतहैजियमाहिंकियोजो बिना बिचारे॥

कह्यो है पचायोअन्न पण्डित पुत्र पतिव्रतास्त्री सुसेवित राजा बिचारिकरिकहिबो अरु करिबो इनतेंबिगार कबहूं न उपजै। यह सुनि एकपरेवा बोल्यो अहो याडोकराकी बातें आपदामें कहांलौं बिचारैं ऐसे संदेहकरियेतौ भोजनकरनोहू न बनै क्योंकि अन्न पानीमेंहू संदेह है। ऐसोविचार करयो करैं तो सुखसों जीवनहू न होय कह्योहै कि तृषावन्त असंतोषीक्रोधी सदासंदेही जो औरं के भागकी आशकरै अति दयावन्त ये छहौंसदादुःखी रहैं इतनी कहि वह परेवा चांवल चुगन उतरयो वाके साथ सबउतरे तब चित्रग्रीवनै बिचारयो कि इनकीलार जो होय सो होय परसाथ छोड़नो उचित नाहीं कह्यो है मनुष्य अनेकशास्त्रपढ़ैं औरनको उपदेशन्देइ परलोभ आयघेरै तब बुद्धि न चलै आगे उनके साथ चित्रग्रीवहू उतरयो अरु जब वे पखेरू जालमें आये तबवाने जालकी जेवरी खेंची सब बझे तद जाके कहेउतरे थे वाकी निन्दा करनि लागे ऐसे औरहू ठौर कह्यो है कि सभामें सबते आगे होय काम करै जो सँवरै तोसबको फलसमानहोय औबिगरै तौ दोषवाहीको देइँ जो आगे बढ़ै वाकीनिंदासुनि चित्रग्रीवबोल्यो अरे याको दोषनाहीं जब आपदा आवतुहै तबमित्रहूशत्रुहोतु है जैसे बछराकै बांधिबेको गायकी जांघही थांभहोतुहै॥

दो० बधिक बध्यो मृगबाणते रुधिरो दियो बताय।
अतिहित अनहितहोतुहै तुलसीदुरदिन पाय॥

यथा ज्योतिषआगम जानसब भूतभविष्यवर्त्तमान।
होनहारि जब होति है उलटि जातु है ज्ञान॥

कही बन्धु तुम अपनी बुद्धिके दोषतेबँधे पर अब मनमें दुःखजनि करौ।कह्यौहै कि पक्षी एकयोजनते भूमि पर्यो अन्नदेखै परजाल न देखै। ताते तिहारी मतिको दोषनाहीं क्योंकि चन्द्र सूर्यहूग्रह पीड़ा पावतुहैं अरु गज भुजंगहू बन्धनमें परतुहैं। पंडित निर्धन होतु हैं अरु समयपाय पशु पक्षी नंभचर जलचरहूपर सबहोय दुःख पावतुहैं। जो भावीमेंहोय सो विनाभये नाहीं रहतु। ऐसे हिरण्यकने चित्रग्रीवको समझाय मनोहर बचन सुनाय खवाय प्याय कुटुम्ब समेत विदाकियो अरु आपहू बिलमेंगयो। तब लघुपतनक काग जो प्रातही ब्याधीको देखि भाग्यो रहै वानेये समाचरपाय आपने मनमाहिं कहो कि संसारमें मित्राई बड़ो पदार्थ है। देखौ मित्र कौनठौर कामआयो यह विचार रूखते उड़ि मूसकके वारजाय बोल्यो अहो हिरण्यक तुमको मेरो प्रणामहै अरु तुम्हें बड़ो जानि मित्राईकरनि आयो हौं। यह सुनि हिरण्यकबोल्यो अरे तू को है।इनकहीहौं लघुपतनक नामकाग हौं यह सुनि हिरण्यक हँसिकरिबोल्यो मोसों तोसों कैसीमित्राई। अरे शत्रुसों मिताई करनो बिपत्तिको मूल है अरु हम तिहारे भक्ष्य तुमहमारे खानहारे। याते जहां मित्राई बूझिये तहांकरो। अनामिलसंग न होय अरु जो होय तो वैसेहोय जैसे स्यारनेबँधायो हरिणको अरु छुड़ायो कागने। काग बोल्यो यह कैसी कथाहै। तहां मूसा कहतुहै॥

मगधदेश में चम्पकनामबन। वहां अनेक दिनते एकचम्पा के रूखपर सुबुद्धिनाम काग अरु वाकेतरे चित्रांगद नाम हरिण रहै उन दोउनमें अतिप्रीतिरही। तहां हरिणको एकदिन काहू स्यारने हृष्टपुष्ट देखि आपने मनमें बिचार्यो कि यासों प्रीति करौं तौयाको मांसखैबेको मिलै। यह विचारि हरिणके पास आयबोल्यो मित्रतुम कुशलतेहौ मृगकही भाई तूको है। पुनि स्यारते उनकहीहौं क्षुद्रबुद्धि नामस्यारहौं। यावनमें मित्रकरि हीन निरबन्धु अकेलो बसतुहौं। आजतिहारो दर्शन पायोमेरे

नीमें जी आयो अब तिहारे पाँयानि तररहिहौं। ऐसे बातन ल-
गायवाके संगलाग्यो। सांझभई तबकुरंग आपने आश्रमको च-
ल्यो अरु वहऊ साथहै लियो। निदान चलत चलत वहां आये
जहांमृगको मित्रकागरहो।स्यारकोदेखिकागबोल्योमित्रयहदूसरो
तिहारेसाथ को है। मृगकही यह क्षुद्रबुद्धिनाम स्यारहै औ मोते
मित्रताई कियो चाहतुहै। कागकही हितू बेग परदेशी अनजान
सों प्रीति न कीजिये। कह्यो है जाको शील स्वभाव आश्रम न
जानिये तासों मित्रता न करिये। अरु नीति तो यों है कि वा-
को अपनेघरमें बासहूनदीजै न जानिये कैसोहोय जैसेअनजाने
बिलावको बास दै दीन गीध पच्छी मार्योगयो। मृगबोल्यो यह
कैसी कथाहै तहां काककहतु है॥

गंगाजूकेतीर गृध्रकूटनामपर्व्वत।तहांएकपाकड़कोरूख।वाके
खोड़रमें एकअतिबूढ़ा गीधरहै। तहांऔर पच्छीआपनो चुनिल्या-
वे। तामेंते थोरो २ गीधकोहूबांटदें जासों वहजीवै। अरु जब
वे पच्छी चुगबेकोजायँ तब गीध उनके छौनानिको रखवारीकि-
योकरै। एकदिन दीर्घकर्णनाम बिलावपक्षीनके शिशुखैबेको वा
रूखपैचढ़यो। वाकोदेखिवेछौना पुकारे। तबगीधने उनकीपुकार
सुनि खोड़रते मूड़निकासिकह्यो अरेयहकोहै। तबबिलावगीधको
देखिडरि आपनेमनमाहिं कहनिलाग्यो किजोह्यांतेभागिहौंतोयह
पाछेदौरिमारैगोयासों याकेपास गयेहीबनै यहबिचारि सरलस्व-
भावहोय गीधके पासआय दण्डवत् करि बोल्यो तुमबड़ेहो गीध
कही तू कोहै अरु। इतक्यों आयो है दूररहिनानहीं अबहींमारतु
हौं। बिलावकही स्वामीप्रथममेरे आवनको कारण सुनिलेव। ता
पाछेजोमनमानै सोकरियेगा। मैंनेब्रह्मचर्य ब्रतपालनकियोहै अरु
चांद्रायणब्रतको मेरेनियमहै। अबहींगंगाजूस्नानाकिये आवतुहौं
गैलमें पच्छीनकेमुखतेंतिहारीबड़ाई सुनी कि तुमज्ञान चर्चामेंनिपु-
णहौताते तुमसों धर्मउपदेश सुनिबेको आयोंहौं। अरु विचारऐसो
है किजोकोऊदिन ऐसेसाधुकीसंगतिमेंरहौंतोपवित्रहोउँ।कह्योहै॥

दो॰ हियते मिटै असाधुपन लहै अगाध विवेक।
लालजु संगति साधुकी हरै उपाधि अनेक॥

मेरौतौयहमनोरथहै। यापरमारयोचाहौ तौमारो। कह्योहैगृहस्थको ऐसो चाहिये कि बैरीको बैरीहूं आपने घरआवै तौहूवाकी पूजाकरै जैसे वृक्षको कोऊ काटनिआवै तौ वह वाहूपर छाँहकरै याते बूढ़ेके घरवालकहू पहुनोआवै तो सेवा योग्यहै अवस्थाको विचार कछुनाहीं पाहुनो घरआवै ताको सबते बड़ोकरि मानिये यथायोग्य पूजाकीजै। जो औरकछु घरमें न होय तौ मीठेवचन तृणको बिछौना शीतलजल दै अति हितकै मिलबैठे। अरुइतनौहू नकरै तौ जाकेघरतें अतिथि निराशजाय वाको धर्मलैजाय आपनौ पाप देजाय। याते साधु निर्गुणहूपर दया करतुहैं जैसे चन्द्रमा सबठाम प्रकाशकरै। गीधबोल्यो बिलावको मांसते अधिकरुचि होतिहै अरुह्यां पक्षिनके शिशु रहतहैं ताते तोसों हौं कछुकहिनाहींसकतु। पर जो तू यहांरहै तौ इनछौनानितें कपट जिनकीजौ। यहसुनि बिलाव ने भूमिमें हाथछुवाय कानहाथ धरि कह्यो स्वामी मोंते ऐसीकबहूं न होय। धर्मशास्त्र पढ़ि सुनि मैं बैराग्यदशा गहीहै। अरु जीवहिंसा बड़ो अधर्महै। सबशास्त्रनिमें बर्जितहै। कह्योहै साधुको ऐसोचाहिये कि परायो अपराध सहै सबको पालै सो स्वर्गलोकपावे। यामें संदेह नाहिं क्योंकि धर्म सदासहायहोय अरुजाकोमांसखाइयेसोतो जीवहीसों जाय खानिवारेको छिनएक जीभही को स्वादु ताते आपनो सोजीवं सबकाहूकोजानिये। कह्योहै जो बनके कंदमूलफल फूलपातसों पेटभरै तौ जीवहिंसा काहेकोकरिये। ऐसेकहि प्रतीतिबढ़ाय बिलावगीधके समीपरह्यो। कोऊ समयपाय द्वैचारि पक्षीनकेछौनानिकोपकरि ल्यायौ॥ जब वे शिशुपुकारे तब गीधबोल्यो अहोदीर्घकरण इनबालकनिको तू काहे ल्यायौ है वाने कही स्वामी मेरे बालक मोते बिछुरे हैं। ताके हेतु इनते दिनकटी करतुहौं ऐसे कहि यदअपनौ मनोरथ साध्यो तद बिलावह्यां ते परायो अरु

पक्षिन आय अपने बालकन के हाड़ चाम गीधके खोड़र समीप परेपाये। तब उननि जान्यौ कि हमारे छौना या पापी विश्वासघाती चाण्डाल ने खाये। ऐसे समझि सबनि मिल गीधको जीवसों मारयो ताते हौं कहतुहौं कि बिनजाने मित्राई कबहूं न करिये यह बात सुनि स्यार क्रोधकरि बोल्यो मित्र जा दिन तुम हरिण सों मित्राई करी ता दिन यह तिहारो कुल स्वभाव कहा जानतुहो जोमिल बैठ्यो। याते आपनो परायो कहनो मूर्खनि कोकामहैं। पण्डितको तौ सबआपनेहीहैं जैसे मृग हमारो मित्र तैसे तुमहूं। अरुभलोबुरो तौ व्यवहारहीते जान्योंजातुहै। हरिणकही मित्रविवादक्योंकरतुहौ। जितेकभिलरहैं तितेकहीभले काककही भाईतुमजानौं इतेकमें सबआपने आपने उदरकीचिंताकोगये अरुसांझको आयइकट्ठेभये। याहीभांति वहांरहनिलागेकितेकदिनपाछेस्यारनेहरिणको एकलो पायकह्योमित्रहौं तिहारेलये आछोहरयो कोमल यवको खेतदेखि आयोहौं। जोमेरी गैल चलौ तौ दिखाऊं। यारीतिकपटकरिबाको कुमार्गमेंल्यायो। अरुवहू कुविषनकोमारयौ लोभकरि वाकेसंगही उठिधायो। ऐसे नितवाके संगजायजाय खायखाय आवै। एकदिनवाखेतके रखवारेने हरिणको आवतुदेखि फांदरोप्यो। ज्योंहीं यह चरबेको पैंठ्योत्योंहीं बभयो तबमनमें कहनिलाग्यो कि मित्रबिन मोहिंया संकटतेको निकारि है। अरुइतस्यारवाको फँस्योदेखिनाचिनाचि मनमें कहनिलाग्यो कि मेरेकपटको फलआज मिलैगो जबरखवारो याकोमांस भक्षणकरैगो तौ हाड़चाममें जो मांसलपट्यो रहैगो सोहौं खाउँगो। यहतो या बिचारमें नाचिकूदिरह्यो है। अरु मृगनेजान्यो यह मेरोई दुःख देखिब्याकुलहो हाथपांवपटकतुहै। पर यह न जान्यों कि दामकोलोभी नटुवाकीभांति कला करतुहै। आगेस्यारकी दशादेखि मृगकही भाई मेरे निमित्ततूएतो खेद क्योंकरतु है। कह्योहैआपदामें कामआवैसोहितू रणमेंजूझै सोशूर दरिद्रमें स्त्रीकी परीक्षा लीजिये दुःखमें बन्धु जांचिये ऐसे

मृगनेकह्यो। तदस्यारने निकटजाय देख्यो कि यह तौ कठिन बन्धनमें परयो है। ताते मेरो मनोरथ शीघ्रसिद्ध होयगो। ऐसे बिचार बोल्यो भाई यह जाल तौ तांतको है अरुमेरे आदित्य को उपासहै। सो दांतकरि कैसेकाटौं जो और ब्रतहोय तौ कछु चिंता नाहीं पर रविके बृतको यह बिचारहै जो भंगहोय तौ सब पाछली काष्ठा निरफलजाय याते आज तौ यहबातहै। काल सकारे जो मोते बनैगी सो करौंगो। ऐसे कहि वहांते उसरिपरै होयबैठ्यो। इतेकु में निशा ब्यतीतभई अरु हां सुबुद्धि नाम काकजाग्यो। सो चिंतायकरि कहनलाग्यो कि रात्रि मित्रमेरो नाहींआयो अब कहूं खोजौं। यह कहि हांतेचल्यो। आगेजाय देखै तौ जालमें बंझरह्योहै। काककही मित्रयहकहाहै। उनकही हितूमैं तेरोकह्यो न मान्यो। ताही को यहफलहै पुनिकाककही वह तेरो नयो मित्र कहां है। इनकही वह मेरे मांस को लोभी ह्यांहीहोयगो। बहुरिकाककही भाई साधुजन अपनो सों स्वभाव सब काहूको जानै अरु दुष्टको जातीयस्वभाव है जो वाते करै भलाई ताते वह करै बुराई कह्योहै दुष्टबिनबुलाने आय पहिले पायँपरै पाछे कानाबातीकरै। हितकीरीतिमों प्रीतिजनाय कपटकर कुमार्ग बतावै। अवसरपाय घातचलावै। जैसे माछर पीठपाछे आयकानसों लागिसमयपायडंकमारै तैसेही दुष्टमनुष्य तातेहों कहतुहोंकि बैरीकोबिश्वासकबहूंन कीजै ऐसेहूं कह्योहै॥

कुं० बैरी बँधुआ बानियाँ ज्वारी चोर लबार।
ब्यभिचारी रोगीऋणी नगरनारि को यार॥
नगर नारिको यार भूलि परतीत न कीजै।
सौ सौ सौहैं खाय चित्त एकौ नहिं दीजै॥
कहि गिरिधर कविराय घरै आवै अनगैरी।
हितकी कहै बनाय जानिये पूरो बैरी॥

इतेकबातैंसुनि मृग लांबीसांस लै बोल्यो जे झूंठीबातैं कहि औरेको बुरो करतुहैं तिनको भार पृथ्वी कैसेसहतिहै। ऐसेबत

राय रहेथे। इतेकमें रखवारो आवत देख्यो तब वायसने कुरंग ते कही अबतू आंखि फिराय मृतक होयरहु। जबमैं पुकारौं तब उठिभाजियो। यह सुनि उन वैसेहीकरी। रखवारो आय हिरण को देखिबोल्यो यहतौ आपहीमररह्योहै। याहि कहामारौं। आगे वाहि मखोजान बंधनखोलकेचाहै कि. वाहिउठावै। त्योंहीकाक बोल्यो अरु हिरणउठिभाग्यो। तब रखवारेने खिस्यायकै लौठि-याघाली सो स्यारके मूड़में लागी अरु लागत प्रमानहीमस्यो। ऐसे औरहू ठौरकह्योहै कि तीनदिन तीनरात तीनपच्छ तीनमास तीनवर्षमें पुन्य अरु पापको फलमिलि रहतुहै॥

इतनी कथासुनि लघुपतनक काकने हिरण्यक चूहासों कही मित्रजो कदाचित् मैं तुम्हैं खाऊं तौ पेटहू न भरै याते तुमसे मित्र धर्मात्मा साधुको बुरोकहि करिहौं क्योंकि चित्रग्रीव सहित सब पच्छी जब जालमें परे तब तुमने सहायताकरि उनके जीव बचाये। कह्यो है कि आपने कार्य सिद्धकरिबेको सज्जनते मि-त्राई करिये तौ एकदिन कामआवै। तातहौं तिहारौ पठंगौकियो चाहतुहौं कि कबहूं मेरेदुःख में सहायता करिहौ। या कारण आयौंहौं तुम और मतिजानौ। पुनिमूषक बोल्यो कि चञ्चलसों मित्रता कबहूं न कीजे॥

दो० कागरु भैंसा का पुरुष आन भेंड़मंजार।
इन पांचन के बिश्वास तें आपुनजैये हार॥

याते इनसबनिको बिश्वास कबहूं न करिये बैरी मिल्यो रहै ताके हितपर न भूलिये। कह्यो है कि कैसेहू तातो पानीहोयपर अग्निको बिन बुझाये न रहै निबल सबल न होय अनमिलबात कबहूं न मिलै जैसेपानीमें गाड़ी अरु भूमिपर नाव नचलै पुनि ऐसेहूकह्यो कि स्त्रीते मर्मकी बात न कहिये जो कहिये तौबिरोध न करिये। करिये तौ जीवनको आश नराखिये। कोऊऐसेहू कहतुहैं॥

कुं० सांई येन बिरोधिये कबिपाण्डित गुरुयार।

बेटा बनिता पवँरिया यज्ञ करावन हार ॥
यज्ञ करावन हार राजमन्त्री जो होई।
विप्र परोसी वैद्य आप को तपै रसोई ॥
कहिगिरिधर कविराय यहैकैसींससुझाई।
इन तेरह तें तरह दिये बनिआवै साईं ॥

बहुरि काककही प्रीतम जो तुमकह्यो सो सबमैंसुन्यों परमेरो यहविचारनहीं जो तुमसे द्रोहकरौं। अरु जोतुम मोसों प्रीति न करिहो तौ तिहारे द्वारपर उपास करिकरि प्रानतजौंगो। मोहिं रामलक्ष्मणजूकीआनहै क्योंकि असाधुकीमित्राई थोरेई दिनन मेंटूटै जैसेमाटीकोपात्र फूटिकैन जुरै अरुसाधुकीप्रीतिऐसे है जैसे सुवरणकोपात्र बेग न फूटै और जो फूटै तौ फेरिसंधै औ कितेक सज्जन पुरुष नारियलकीभांतिरहतुहैं कि ऊपरते तौ कठिनअरु भीतरकोमल पुनि दुष्टजन की बेरकीसी रहनिहै. कि ऊपर कोमल अरु भीतर कठोर। ताते सज्जन अरु दुष्टजन स्वभावहीते जान्यो जातुहै कछुरहनते नहीं अरु पवित्र दाता शूर संकोची स्नेही निर्लोभी सत्यबक्ता साधुहोतुहैं असाधुनहोयँ यासोंतुमहीं कहौ कि साधुजनपाय कोन प्रीतिकरै। यारूपकी बातैं सुनि हिरण्यक मूसा बिलते बाहरनिकसि बोल्यो कि तेरेबचन सुनि मैं अति सुखपायो जैसे काऊलूअको मारयो स्नान करि चन्दन सब अंगपर चढ़ाय शीतलहोतुहै तैसे मेरोहियो ठंढोभयो कह्यो है छः प्रकार ते प्रीति बढ़तिहै लैबोदैबो गुह्यकहिबो सुनिबोखैबो खवायबो अरु ये स्नेहके दूषणहैं सदामांगबो अप्रियबचनकहिबो मिथ्याभाषिबो चंचलता अरुजुआसो तोमें एकहूनाहीं यासोंहौं तेरोसुबिचारदेखि प्रसन्नभयों। आजते तू मेरोमित्रहै इतनीबात कहि काकको द्वारपर बैठाय मूसा बिलमें गयो अरु ह्वांतेकछुखैबे की सामग्री ल्याय खवाय आपहूवाकेपास बैठ्यो। ऐसेवेदोऊह्वां रहनिलागे। एकदिनकाककही भाईमूसा या ठौर तौ अतिकष्ट मोंअहार जुरतुहै यासों वहांचलौ जहां बहुतचुगो सुखतेखैबेको

मिलै। पुनि मूषक बोल्यो मित्र कह्योहै कि जो सयानौहोय सो अगलो पांव धरि पाछिलौ पग उठावै। ताते प्रथमठौर विचारौ तापाछे ह्यांतेचलो। वायसकही बन्धु तुम नीकठाम विचारो है कि दंडकारण्यबनमें कर्पूर नामसरोवर। तहां मन्थरकनाम कछुआ मेरो मित्रहै सो बड़ोपण्डित धर्मात्माहै। कह्यो है औरनके धर्म उपदेशदेनको सब पण्डितहैं पर आप धर्ममार्गमें दृढ़ताराखें ते बिरलेजनहोतुहैं। ताते मित्र वहहमको भलीभाँति राखिरक्षाकरिहै कह्योहै सुनो जादेशमें आपनी बड़ाई मित्र विद्याकी प्राप्ति सुसंगगुण बिचार अरु तीरथहू न होय तौ वहां बसिबो उचित नहीं। मूषककही हितू हां मोंकोहू साथलैचलो। ऐसे बतराय दोऊकछुआ पैगये इन्हें देख कच्छपबोल्यो मेरोमित्र लघुपतनक आयो। इतनोंकहि आंगूबढ़ि सिष्टाचारकरि आदरसों पायँपखार आसनपर बैठाय पूजाकरनि लाग्यो तब कौआबोल्यो मित्र याकीपूजा बिशेषकरि करौ। यह बड़ो धर्मात्मा हिरण्यकनाम मूसा सबचूहनको राजाहै। याके गुणकी स्तुतिकरिबेको मेरो मुख नाहीं जो सहस्रमुखते शेषनागजूकहैं तौ कहिसकें इतनी कहि चित्रग्रीवकी सबकथा सुनाई तबमंथरकने वाकी पूजाकरि पूंछ्यो आपुको बासकहां अरुह्यां आवनो कैसेभयो तबमूसा कहनलाग्यो चम्पानगरी में संन्यासियनके मठ तामें चूराकरण नाम संन्यासीरहै सो जो भिक्षामांगि अन्नल्यावै वह ऊंचे आरा में राखै वा अनाजकोहौं कूदिकूदि खाऊं कितेकदिनपाछे वाको मित्र वीनाकरण नाम संन्यासी तहांआयो चूराकरण वासों बातकरै अरु लकड़ी धरती में खरकावे तब वीनाकरणकही तू जो मेरीबात नीके चित्तदै नाहीं सुनत सो तेरोमन कहांहै। पुनि उनकही गुरुभाईहौ तौ तेरीबात हियोदे सुनतुहौं पर यह नीगुरौमूसा मेरी भिक्षाको अन्न सबखातुहै मोहिं दुःखदेतुहै याहि लालचलाग्यो भाई याको कछु उपायकरौ वीणाकरण बोल्यो याको कछू कारणहै। ज्यों एकतरुण स्त्रीने बूढ़े पुरुषको आलि-

गन चुम्बनकरि जारको छिपायो त्यों यहमूसाहू बिनकारणनाहीं कूदतुचूराकरणकहीयाकैसीकथाहैपुनिवीणाकरणकहनलाग्यो॥

गौड़देशमें कौशम्बीनाम नगरीतामें चन्दनदासएकबनियां उन वृद्धअवस्थामें धनके मदसों लीलावती नाम और महाजन की बेटीब्याही । सो कामकी अधिकाई ते थोरेई दिननमें यौवन वती भई जब वह भर्त्तार वाके सुखको न पूंछै तब वाहि अनखा- वनों लागै जैसे विरहिनिको चन्द अरु घामके तौंसे को सूरज न सुहाय तैसेतरुणस्त्रीको बूढ़्यो स्वामीहूनभावैक्योंकि वृद्धकोदर्प कहां कह्योहै ज्योंबालकको ओषधि न रुचै त्योंवहहू वाहिनीको न लागै परबुढ़उनातो अधिक प्रीतिकरै। पुनि ऐसेहू कह्योहै न डोकराभोगकरसकैनछांड़िसकै चाटतचूमतुरहैजैसेबिनादांतको कूकरहाड़पाय न खाय न छांड़ै। जब वाकीइच्छापूरण न भई तब वह बनियांकीबेटी लीलावती कुलकी मर्य्यादछांड़ि धर्मको भय नाखिलोकलाज तजि यौवनकी अधिकाईसों एक और बनियां के पुत्रते व्यभिचार करनलागी अरुकामातुरह्वै पिताके घरबसै रात्रिको जाय भर्त्तारके आगे और सों बतराय कह्योहै जो नारी पतिके साक्षात् और पुरुषसों बातैं करै सो निस्संदेह परकीया होय कहतुहैं इतनी भांतिसों परकीया होति है बालहोय जाको पति वृद्धहोय कुरूपहोय बिदेशहोय अशक्तहोय पास न रहै हित न करै असंतान होय। नारी इतनी भांति व्यभिचारिणी होतिहै अरुमद पीवै कुसंगमें बैठे पतिके औगुण और सों भाषै घरघर डोलै अतिसोवै नित तनु मांजै सदा शृंगार करतिरहै रात्रि पर- धाम बसै ये नारिनके दूषणहैं अरु जिनके सयान नाहीं ढिठाई नाहीं और पुरुषसों न बोलै लाज बहुत ते स्त्री पवित्र जानिये क- हतुहैं नारी घृतसमान अरुपुरुष अग्निसम ताते इनको संगभलो नाहीं। पुनि कह्यो है-बालअवस्था में पितारक्षाकरै तरुणाई में पति रखवारी करै वृद्धापनमें पुत्र सावधानीते राखै तौ स्त्री को धर्मरहै। नातो नष्टहोय आगे एक दिन वह लीलावती बनियां

के पुत्रसाथ अपने घरमें आनन्द करि रहीही। यामें वाको पति बाहरते आयो ताहि आवतुदेखि बेगही खटियाते उतरि सन्मुख धाय आलिंगन कियो वाके देखिबेको तो द्वैआंखिहों पर एकसों दीसतुनहीं अरु जासों दीसतुहो तापै चुम्बनको मिसकरि उनि मुखराख्यो और जारको बाहर निकारिदियो कह्योहै कि जोबृहस्पति ते विद्या पढ़ै पर उत्पातकी ठांव वांहूकी बुद्धिस्थिर न रहै अरु कछू न बनिआवै सोनारी चणही में उपायकरै आगे लीलावती को आलिंगन करतिदेखि एककुटनीने कारणविचारिवाहि डांट्यो अरुकह्यो ऐसो काम फेर जनिकीजो ताते मूसाके कूदबे को कारण मैं जान्यो कि याके बिलमें मायाहै क्योंकि धन बिन बल नाहीं होतु कह्यो है ॥

दो॰ कनककनकते सौगुणी मादकताअधिकाय।
वह खाये बौरातु है यह पाये बौराय ॥

ऐसे कहि संन्यासियन मिलिकैमेरे बिलते सबधन काढ़िलियो। ताके दुःखतेहों बलहीन भयो अरु मनमें उत्साह हू नाहीं रह्यो क्योंकि देह में जो बल हर्षहोतु है सो माया ते। अरुधन हीनतेकछु न बनै कह्योहै धनहीन पुरुष संसारमें मृतक समान हैं जब द्रव्यहीन भयो तब निबलाईते मोपै चल्यो न जाय पुनि चूड़ाकारण संन्यासी मोहिंदेखि बोल्यो कि यहमूषक अब सीधो भयो जैसे ग्रीष्मऋतु में नदी बलहीन होतिहै तैसो है गयो। कहतुहैं द्रव्यहीनकी मति स्थिर न रहै जापैधन सोईबुद्धिमान्। पंडित, ज्ञानी, दानी, बली, चतुर, कुलीन, गुणी है। अरु पुत्र बिन घरशून्य विद्याबिन हृदय औ दरिद्रीको संसार सूनों लागतु है पुनिदखौ धनगये कैसौहू स्वरूप होय पर कुरूप होयजातु है ऐसी बातें वा गोसाईंकीसुनी। तब मैंने आपने मनमाहिं विचार्यो कि अब ह्यां रहनो योग्य नाहीं कह्यो है ॥

दो॰ मन्त्र मैथुन ओषधी दान मान अपमान।
मर्म द्रव्य गृह छिद्र ये प्रकट न लालबखान ॥

जोकहियो तो मिथ्याआपनो गर्वगवाँवै । जबदेवता असंतुष्ट होतुहै तब जोउद्यमकरै सो निष्फलजाय अहंकारी को दैवात जैसे धतूराकोफूल कैतौ भूमिपस्यो सूखै कै महादेवके माथे चढ़ै ताते भिक्षाउपायकरिजीबो योग्य नाहीं कृपण ते मांगिबो औ मरिबो समानहै ॥

क० मान सनमानको पयानहोत पहिलेही यद्यपि निपट गुणी गिरिहू ते गरुवो । कहै कविदेव बारबार जस उच्चरतु चुटकी देतु लागै कुटकीते करुवो ॥ अतिही अज्ञानबाहु तऊ तन थोरो दीसै मनमाहिं लसेजो हिंडोरेकोसो मरुवो । तृणहूते तूलहूते फैनहूते फूलहूते मेरेजान सबहूते मांगिबो है हरुवो ॥

पुनि चूड़ाकरणते वीणाकरण कहन लाग्यो कि पराधीनभोजन द्रव्यदै मैथुन विद्याकरहीन प्रदेश को बास कायारोगी पराये घरसोनो ऐसेमनुष्यको जीवन मरण समान है कह्यो है लोभते चित्त डुलै कष्ट पावै मरणहोय लोक परलोकजाय । जबवागोसाईंने ऐसेबोल कहे तब मैंने बिचास्यो कि हौं लोभी असंतोषी आत्मद्रोही हौं तातै मेरी संपति गई अरु संतोषीकी संपति कबहूं न जाय जेसंतोषकरिअघानहैं तिनको जैसो सुखहै तैसोअसंतोषी को नाहिं कह्योहै जिनतृष्णानराखी काहूकी सेवानकरी अधीन बचन न भाषे विरहकीपीर न सही अधीरतानकी ऐसेपुरुषनितेसौ योजनधनदूररहतुहैअरु संतोषीकोहाथकीवस्तुकोहूआदरनाहीं । ऐसेबिचारकैहौं निर्ज्जनबनमें आयो तिहारोआश्रम स्वर्गसमान पायो। कहतुहैं यहसंसार विषयको रूखहै यामें द्वैफलमीठे कहतु हैं एकतौकाव्यरस दूजो साधुकोसंग इतेकबातेंसुनिमंथरककछुआ बोल्यो मित्रधनमें बड़ोदोषहै । एकतौ अनेक दुःखपायइकट्ठो कीजै दूजेप्राणतेहू यत्नकरिराखिये ऐसोधनकाहेकोभलो । कह्यो हैजे आपनो सुखछांड़िपरायेलिये द्रव्य उपजायराखैं ते ऐसे जैसे मोटिया मोटढोयमरै अरु भोग औरहीकरै ऐसेतो सबधनवानही कहावैंक्योंकि दान भोगमें तौ नाहिंयाते दरिद्री औधनी समान

पर धनवान्को एक और दोष कि वाहिगये को शोच। सो निर्द्धनको नाहिं पुनिकह्योहै चारबात संसारमें आय मनुष्यते होनी कठिनहैं प्रियवचन सहित दान गर्वबिनज्ञान क्षमासमेत शूरता त्यागलिये धन याते धर्मका संचयकरिये अति लोभ न करिये जैसे एकस्यार अधिक लालच करि माख्योगयो हिरण्यक बोल्यो यह कैसी कथाहै। कछुआ कहनि लाग्यो॥

कल्याणकटकनगरमें भैरवनामव्याधी सोएकदिनविंध्याचल केबनमें गयोहो सोवांते एकमृगमारिकांधेलिये आवतुहो गैलमें एकशूकर आवतदेखियाने लोभकरिवापै बाणघाल्यो। सोशर तौ वाकेलाग्योपर मरतुमरतु वाने याहूको आयमाख्यो इहिबीचएक दीरघरवनामस्यारक्षुधितहै आयकढ्यो अरुइनतीननकोहुआंपरे देखि विन आपनेजीमाहिंविचाख्यो कि आहारबहुतपायोहै। याहिअनेकदिन लौं खाऊंगो अरु आपनीकायापुष्टकरोंगोयहबिचारिवह स्यार बधिकके पासजाय ज्यों पहिले धनुषकी जेह खानिलाग्यो त्योंहीं जेह टूटि वाके कपालमें लाग्यो अरुतत्काल प्राणदेहते निकरि भाग्यो जंबुक जीवसोंगयो मांस सब हुआंहीं धस्योरह्यो। तातेहौं कहतु हौं कि अतिलोभकरि संचय न करिये अरुजो धन पायनखाय न देय ताकौ द्रव्यजौलौंजीवै तौलौंरहै। मरेपरवाके धन जनके औरही गांहक होतुहैं जीवतुभर देखिदेखि मनरंजन करै। मरेपै वाके कामकछु न आवै याते खाइये लुटाइये सोई आपनो क्योंकि यामें स्वार्थ परमार्थ दोऊरहतुहैं। इतनी बात कहि पुनिकच्छपने मूसासों कह्यो कि अबतुमगये द्रव्यकोशोच जिनकरो क्योंकिजो वस्तुपाइये योग्य न होय ताको यत्नपंडित चतुरनाहीं करतुहैं तातेमित्रतुम चिन्तामतकरो कह्यो है कि विद्यापढ़ेते सबपंडित नाहींहोतुहैं जे क्रियावान् तेई पंडित हैं जैसेरोगीकोरोगओषधिकोनामलियेनजायखायतबहीं जायतैसे बिनउद्यम बिचारकिये धनहून आवै आंधरेके हाथ दीपककहा करै। आपनी आंखकीज्योतिबिन प्रकाश न करै पुनि कह्योहै

दांत,केश, नख,नरस्थान छूटेते शोभा न पावै अरुसिंह शूर गज पान परिडत गुणवान् औ योगी ये जहां जहां संचरैं तहां तहां आदरबढ़ावैं कहतुहैं जैसे कुआंमें दादुर सरोवरमें कमल आपही ते आवैं तैसे उद्यम किये लक्ष्मीहू आवै दुःख सुख चक्रकी भांति फिरतुहै अरु जे पुरुष साहसी शूरज्ञानी उद्यमी हैं तिनको दुःख नहीं व्यापत। कह्योहै कि कैसोहू पंडित गुणी तपस्वी शूर बन्धु धनवन्त होय परलोभकिये अनादरहीपावै। गुणवान् स्वभावही तेबड़ो जैसेकंचनको आभूषणज्यों कूकरकेगरेबांधै तौहूसुहावनो लागै ताते हौं कहतुहौं कि धनको शोच न करिये क्योंकि जब माताके गर्भमें विधाता बास देतुहै ताके प्रथमहीं दूध स्तन में प्रकट करतु है औ पाछे जन्म होतुहै ऐसो विचारिये॥

दो० जिन तोते हरये किये श्याम काग हंस सेत।
मोर विचित्रज रंगकिये सो चिन्ता करिदेत॥

अरुसुनो धनमें एते दुःखहैं उपजतु राखतु जातु। औबहुत बढ़ेहु धनसुख कबहुं न देय यातेज्योंउपजै त्योंदीजै खाइय।तौ-ही भलोनातो जैसे मांसको ऊपरराखे पक्षी खाय भूमिमें स्यार कूकर पानीमाहिं कच्छमच्छ माटीमाहिं कीराकीरी खायँ तैसे धनकोचारभय राजभय अग्निभय चोरभय दुष्टभय। अरुताहूमें यह बड़ोदोष कि मायाके लोभते सेवकहोय आधीनताकरै पर भावीकाहू सोनटरै यासों प्रीतम तुमहमारो साथ अबजिनछांड़ो जन्मभर ह्यांहीं रहो। कह्योहै संतोषकरिरहनो दानदेनो क्रोध न करनो यह साधुकेलक्षण हैं। असाधुते न होयँ। इतेकसुनिल-घुपतनककाक बोल्यो अहोमित्रमंथरक तुमकोधन्यहै अरुआश्र-मके योग्यमहन्तहौ। आपदामें उद्धारलेतुहौ ऐसेजैसे दलदलमें परे हाथी को हाथिहीकाढ़ैं। अरु संसार में तेईनर स्तुति करिबे योग्य हैं जे पराये दुःखमें सहायताकरैं जिनकेद्वारते शरणागत निराशन जाय याचकविमुख न फिरैं इतनीकहिवेतीनो वा ठावँ सुखसोंखात पियतुक्रीड़ाकरतु आनन्दसों रहनलागे। एकदिन

तहां चित्रांगदनाम मृग ओरही व्याधी को डरायो आयो ताहि आवतु देखि मंथरक जलमाहिं पैठ्यो मूसा बिलमेंधंस्यो काक रूखपर उड़िबैठ्यो अरु वाने दूरिलौं दृष्टिकरिदेख्यो कि याकेपाछे औरतो कोऊ नाहिं यह अकेलोई आवतुहै तब काक बोल्यो भाई कुछभयनाहिं। सबनिकरिबैठो यह सुनि वेऊ निकसि आये औ तीनों मिलिबैठे हरिण इनके पासआयो तब मंथरक बोल्यो मित्र तुम कुशलक्षेमते नीके आये कह्योहै उत्तमपुरुषनिको यहधर्महै घर आयेको पहिलेतौ कुशलता पूंछै पुनि आदर करि बैठावै फेरि अतिसन्मान करि भोजनको पूंछै। यह उत्तम जनको व्योहारहै इतनो पूंछिपुनिकह्यो अहोमित्र इत आवन तिहारो कैसे भयो। मृग कहीहौं व्याधीको डरायो आयोहौं अरु तुमते मित्राई कियो चाहतुहौं हिरण्यक कही हम तुमतो सहजही मित्रहैं औ परम्पराय तुमते हमते मित्रताई चलीआवतिहै। कह्यो है जो आपदामें राखै सोतो सदाहीको मित्रहै तुम इतआये सो भलीकीनी आपने घरते ह्यां नीकीभांति रहिहौ यह बात सुनि कुरंगने आहारकियो अरु पानीपी रूखतरे बिश्रामलियो पुनि मंथरकबोल्यो मित्र तुम कहयोकि हौं व्याधीके डरते आयो। सोया निर्जनबनमें व्याधी कहां हरिण कही कलिङ्गदेशको राजा रुक्मांगदसर्वदिशि जीतचंद्रभागानदीके कांठेआय उतर्योहै। अरु सकारे इतआय या कर्पूर सरोवरमें जाए डारि मच्छकच्छ पकरिहै। महबात हौं धीमर केमुखतेसुनिआयोहौं तातेहयांरहनोभलो नाहींकहयोहै कष्टआवतुदेखि दूरितेटारिये मैं तो यहकह्यो पर अब तिहारी बुद्धिमेंआवै सो करो मंथरक बोल्यो हौं और सरोवरमें जाऊं तब काग औ मृग ने कह्यो कि पानीके जीवको पानीकोबल ऐसे हैकि जैसेराजाको आपने राज्यको। पुनि हिरण्यकमूसा बोलिउठो कि भाई तुमतौ बातकोभेद नसमझ ऐसोविचारकरतुहौ जैसोएकबनियांकेपुत्रने अनजाने बिचारकियो अरु पाछे अपनी स्त्रीको देखि दुःखपायो। मंथरक कही यह कैसी कथाहै। तब मूसा कहतुहै॥

बीरपुरनगर वाको बीरसेननाम राजा। ताके पुत्रभयो जाको नाम तुंगबल धर्यो। जब वह समर्थभयो तद राजाने राज सुत को दयो। आप हरिभजनकरनि लाग्यो और राजकुमार राज एक दिनवह राजपुत्र देवदर्शनकिये आवतुहो। वानेकाहू बनियांकी स्त्री तरुणि अतिरूपवती गैलमें देखी। वाकौ रूपचाहि यह काम को सतायो निजमंदिर माहिं आयो। अरुवह लावण्यवतीहू राजकुमारको देखि कामातुरहोय आपने धामको गई। कह्यो है स्त्रियनके ना कोऊ प्रिय औ ना अप्रिय। जैसेबनमाहिंगैयां नयेनये हरेहरे तृण चेरें और मन संतुष्टकरें तैसे युवतीहू नवीननवीन नर चाहैं। पुनि राजकुमारने एक दूती बुलाय वाको अपनी अवस्था जताय वाकेनिकट पठाई। वानेजाय राजपुत्रकी अवस्थासुनाई। तब उनकह्यो हौंतौ पतिव्रताहौं। अरु नारीको ऐसोकह्यो है कि बिन स्वामीकी आज्ञा कछुकाम नं करै। याते जो मेरो भर्त्तार कहैगो सो मैं करूंगी। कुटनीने कह्यो यह तैं भलीकही। हौं ऐसेही करिहौं। इतनौं कहि दूती राजपुत्रपै आई अरु वाको संदेशो कह्यो। राजकुवँर कही यहकैसे हैहै। बहुरि कुटनी कह्यो महाराज कछु चिंता जिन करौ। उपायकरिहौं कह्योहै जो कार्य्य उपायते होय सो बलते न होय, जैसे स्यारनि उद्यमकरि गजकों कीचमाहिं फँसायके मारयो।" राजपुत्र कही यह कैसी कथाहै। तब दूती कहतिहै॥

ब्रह्मारण्यबनमें एककपूरतिलकनाम हाथी रहै ताहि देखि सब जम्बुक मतौ करनिलागे कि काहूप्रकारते या गजको मारिये तौ चौमासे भर खैबेको आहार सुकतो होय। यह सुनि विनमेंते एक वृद्धस्यारबोल्यो या हाथीकों हौं युक्तिकरि मारिहौं। इतनी कहि वहबूढ़ो जंबुक गजके निकटगयो अरु धूर्त्तने मनमाहिं कपटकरि वासों यों कह्यो हे देव तुममोपर कृपाकरो। गजकही अरे तू को है अरु कहांते आयो है। इनकही सब बनबासिन मिलि मोहिं तुमपै पठायोहै औ बिनती करि कह्यो है कि या बनमें हमारो

कोऊ राजानाहिं। बनके राजा तुमहौ सबगुण संयुक्त। कह्योहै जो कुलवंत आचार प्रताप धर्मनीति संयुक्तहोय ताको राजाक-रिये। अरु राजानीकोहोय तो धन स्त्रीको संचयकरिये। कहतुहैं प्राणिकोजैसो मेहको आधार तैसोई राजाको भरोसो है क्योंकि राजाके भयते सबधर्मरहैं। दुर्बल रोगी दरिद्री पतिहूकी पत्नी भूपालके भयते सेवाकरैं। याते अबतुम बिलम्ब जिनकरो बेगचलौ। शुभकर्ममें ढील करनि योग्य नहीं। यहकहि स्यार हाथीकोलै चल्यो। अरु गजहू राजपदके लोभको मार्‍यो वाकेसाथहैलियो। आगेआगे स्यारै पाछेपाछे कुञ्जर ऐसे दोऊ चले। जापैंडेमाहिं बर्षाकी दहदल है रहीही ताही गैल वह बाको लै चल्यो। आगे जाय हाथी दौमें फँस्यो। तब बोल्यो मित्र अबहौं कहाकरौं। स्यार कही मेरीपूंछ पकरिचल्योआव। यों सुनाय पुनि जबदेख्यो यह यामाहिंफँस्यो। तबइनकही तुमशोच जिनकरौ। हौंतिहारेनिकारिबेको आपने सजातिभाइयनको टेरिल्यावतुहौं। इतनीकहि सब जम्बुकनि बोलि लै आयो अरुकाढ़निकेमिसदांतनितेवाकोचाम फारिफारिखायो। गज चिचाय चिचायकै मर्‍यो। इतनौं कहिदूतीबोली महाराज उपायते कहा न होय। याते अबहौं कहौं सो तुमकरौ। प्रथमतो लावण्यवती के पतिकौं चाकर राखो। पाछे जोहौं कहौं सो कीजो। यहसुनि राजकुमारने लावण्यवतीकेभर्तार चारुदंतको चाकर राख्यो। पुनिदूतीने राजपुत्रको सबछल छिद्रकी बातैं सिखायदई। तब उनि वाकी प्रतीतबढ़ाय वाहि सब काममें प्रधान कियो। एकदिन राजपुत्रने चारुदंत सों कह्यो कि आजतें लैहौं एकमासलौं श्रीभवानीजूको ब्रत करिहौं। तुम काहू सौभाग्यवती स्त्रीकौं ल्यायो। आज्ञापाय चारुदंतकाहू असती स्वइच्छाचारिणी को लै आयो। तद राजपुत्रने पवित्रहोय वाहि एकांतलै जाय पायँपखाल भोजनकरवाय केसरकर्पूरचंदनसों चरचि वस्त्र आभरण पहिराय अतिं आदर मानते बिदाकियो। तब गैलमें जाय चारुदंतने लोभकरि वा नारीसों कह्यो

कि या द्रव्यते कछुमोहूंको बांटिदे। उनकही मोहिं राजकुमारने दयो है। मैंतोहिं क्योंबांटि देउँगी। निदान वाने धन न दियो। तद चारुदंतने आपने मनमाहिं बिचाख्यो कि राजपुत्र तौ नित एक महीनालौं इतनोधन देयगो। याते आपनी स्त्रीको क्यों न ल्याऊं जुइतेकद्रव्य सेंतमेत आपने घर लै जाऊं। यों विचारिवह निज घरआय लावण्यवतीसों बोल्योकि हेप्रिये राजकुमार इतनौं धन नितप्रति देइगो। जोतूजाय तौ वह सबधन आपने गेहमाहिंआवै। लावण्यवती बोली। स्वामीहौं तिहारी आज्ञाकारीहौं जो तुम कहो सो मोहिंप्रमाणहै। निदान लोभकेमारे वाने अपनी नारि राजपुत्रको आनदई। पुनि राजकुमारने वाहिदेखि मनमें कही कि जाके मिलनकी अभिलाषाही सोतौ आय मिली अब अपनो मनोरथ क्यों न पूरोकरौं। यह समुझि निरालो करि वाने आपने मनकी आश पूजी अरु धनदै वाहिबिदाकियो। तब चारुदंत बनियां निजमन्दिरमें जाय स्त्रीको शृंगार छिन्नभिन्नदेखि आपनी करणी औ करतूततें आपही पछितायो॥

दो॰ अर्थ न समझौ बात को ग्रन्थ न दीनो मन्न।
नगर लोग के देखते भयो भाँड़ महजन्न॥

इतनी कथा कथ फेरि मूसाबोल्यो अहोमित्र मंथरक जो तुम आपनी ठौरते अनत जायहो तो दुःखपायहौ। आगे इंदुरकी बात न मान मंथरक भयको माख्यो सरोवरछांड़ि बनको चल्यो। अरु वे तीनोंहू वाके साथहै लये। आगेजातही एकव्याधी आयो। तिनकच्छपको पकरिबाँध्यो। कहतुहैं जब आपदाआवै तब सुखमें दुःखबढ़ावै कैसोहू बलवान् बुद्धिवान् होय पर आपदाते न छूटै। पुनि ऐसेहू कह्यो है कि सम्पत्तिमेंविपत्ति संयोगमेंवियोग लाभमेंहानि गुणमेंदोषज्ञानमेंग्लानि मानमेंअपमानहांसीमें विषाद भलाईमेंबुराई येसब समयपाय आपतेआप आयघटति हैं। पर भय औ आपत्यहैसो प्रीतिकीकसौटीहैं। याही में सज्जन अरु दुर्ज्जन जान्यों जातुहै। औ योंकहबेकोतौ सबही सबके मित्र हैं॥

दो० सुख में सज्जन बहुत हैं दुखमें लीने छीन।
सोना सज्जन कसनको बिपति कसौटी कीन॥

आगे मंथरक कोबूभयो देखि वे तीनों चिंता करनिलागे। तद मूसाने हिरणसों कह्यो मित्र तुम पंगुबनि बधिकके आगे ह्वै कढ़ो। जब यह बधिक मन्थरक को त्यागि तिहारे पाछे भजिहै तबहौं याके बन्धनकाटिहौं। काग बोले बहुरित्तम पराइयो। यह बात मूषकते सुनि कुरंग ने त्योंहींकरी। बधिकने देख्यो कि मृग लँगरातुं जातुहै। याहिदौरिकै पकरिलेउँ। यों बिचारिब्याधी आपनो सरबसु जलकेतीर रूखतरे राखि हिरणके पाछे दौरयो त्योंमूसाने मन्थरक कछुआके बन्धनकाटे। वह नीरमाहिं गिरयो। कागपुकारयो भाई भागौ। परमेश्वरने. काजसुधारयो। यह सुनतही मृग चौकरी मारि पड़ायो। ब्याधी निराशह्वै उलटो फिर आयो। ह्वां देखै तौ कछुआहू नाहिं। तब कहनिलाग्यो कि मोहिं ऐसो करनो उचित न हो जो हाथको छोंड़ि औरै को धायो। कह्योहै अति लालच नीको नाहीं। जैसो मृगको लोभ कियो तैसो हाथआयो कछुआ खोयदियो ऐसे पछताय ब्याधी ह्वांतेगयो। ये चारों मित्र तहां सुखसोंरहे उनके मनोरथ पूरेभये॥

इतनी कथाकहि बिष्णुशर्मा बोल्यो महाराज कुमार सुनो या कथा के सुनते सज्जन सों मित्रताहोय मनमें सन्तोष आवै घरमाहिं लक्ष्मी बाढ़ै राजा राजनीति सों चलै प्रजाकी रक्षाकरै। यह मित्रलाभ प्रथमकथाकही। यामें जाकी रुचिहोय सो कबहूं ठगायो न जाय। सदा निर्मल बुद्धिते संसारके सबकाजसाधै। बक्ता श्रोता को श्री महादेवजू कल्याण करैं॥

अथद्वितीयकथाआरम्भ॥

राजकुमारनि विष्णुशर्मासों कह्यो अहो गुरुदेव मित्रलाभ की कथा तौ हमनि सुनी। अब कृपाकरि दूजी सुहृद्भेदकी कथा सुनाओ तहांविष्णुशर्मा कहतुहै कि महाराज कुमार पहिले

एकबर्द्ध औ बाघ सों स्यारने प्रीति करवाई अरुपाछे बर्द्धकोमर-वायो वाही वाघसों। राजकुमारिन कही यहकैसी कथाहै। तद विष्णुशर्मा कहनिलाग्यो॥

दक्षिण दिशामें सुवर्णनाम नगरी। तहाँ एक वर्द्धमाननाम बनियां। सो बड़ो धनवन्त हो। काहूदिन वाने एक और सेठ की संपत्तिदेखि आपने मनमें बिचारयो कि काहूभाँति औरहू लक्ष्मी इकट्ठी करों तो भलो। कह्योहै आपते अधिक बल द्रव्य बिद्यादेखि काको मन मलीन न होय अरु ऐसेही आपना सम्पत्तिकी बढ़वार देखिकोन मनमाहिं अहंकार करै क्योंकि ध-नाढ्यको सबकोऊमानै। पुनि ऐसेहू कह्यो है कि असाहसी औ आलसीनको लक्ष्मी आपही त्यागतिहै। जैसे बृद्धपुरुषको तरु-ण स्त्री न चाहै तैसे विन्है लक्ष्मीहू। अरुजे आलसी होयँ संतोष करि घरमाहिं बैठरहैं तिनको विधाता कबहुं न बढ़ावै। कह्यो है भगवान असाहसी पुत्रहू काहू को न देय। बहुरि कहतुहैं कि अनपाई बस्तुको यत्न कीजै तौ प्राप्तहोय अरुवाकी चिंता न क-रिये तौनमिलै। ऐसे बिचारि बनियां पुनि मनमें कहनिलाग्यो कि जोधन पाय न खाय न उठावै वह धन कौन काम आवै। औबल भये शत्रुको न मारिये तौ वा बलको ले कहा करिये। अरु बिद्या पढ़ि धर्म न जानिये तौ वा बिद्याते कहालाभ। पुनि शरीरपाय उपकार न होय अरु इन्द्री न जीतै तो शरीरसोंकहा अर्थ। कह्यो है थोरो २ उद्यम करेहू धनबढ़ै जैसे बूंदबूंदजल करि घटभरै अरु बिन बिद्या औ धनजो जनसांसलेतुहै सोलुहार की धवनि समान जानिये। ऐसे शोचविचारि करि बर्द्धमान बनियां नन्दक औ संजीव बर्द्धकरथमाहिंजोति बहुत धन द्रब्य लादि रथपरचढ़ि काश्मीरकीओर चल्यो। कह्यो है सामर्थीको कहाभार ब्यापारी को कहा बिदेश मीठो बोलै ताहि कौनपरायो। आगे अधवरगैरमें चलत दुर्गनाम महाबन माहिं संजीवकको पाँवटूट्यो पछारखाय बर्द्धगिरयो। वाहि गिरयो देखि महाजन

कहनि लाग्यो कि कोऊ कितेक उपायकरि मेरोफल विधाताके हाथहै ऐसेविचार बर्द्धको वहांहींछोरि बनियांआगेको चल्यो।बर्द्ध ह्वांरह्यो। कितेक दिवस माहिं वह हरेहरे तृणखाय निर्मलजलपी अति बलवान्भयो अरु एकसमय परमानंदकरि दडूक्यो। वा ठौर एकपिंगलनाम बाघ राज्य करतुहो। पर वाहि काहूने राज-तिलक न दियोहो। कह्योहै आपने बलकरि सिंह मृगराजही कहावै। सो नाहर वाहीकाल यमुनातीर नीर पीवनि गयो ह्वांजाय संजविकके दडुकब को शब्दसुनिं मनहीमन भयमानह्वै पानी विन पियेहीं आपनीठाम आय बैठ्यो। तहां दमनक औ करटक द्वै स्यार रहैं। सो यह चरित्रदेखि दमनकने करटकते कह्यो कि मित्र तुम कछुदेख्यो जु आज यमुनातीरपैजाय बाघ विन पानी पिये आपनी ठावँ सुचित्त ह्वै आनिबैठ्यो।ताको कारणकहा।क-रटककही बंधुमेरोतो यहबिचारहै कि जाकी सेवा नकरिये ताकी वात पूंछेते कहा प्रयोजन कहतु हैं जा गावँ न जानों वाको पैंड़ो पूंछिबेते कहाकाम।मोहिं तो अब याकी सेवाकरतहूं लाज आवतुहै। पर अहारके लोभते करतुहौं। कह्यो है जे सेवाकरि धन चाहतुहैं ते आपनो शरीर परारेहाथ बेंचतुहैं। अरु जे औरकेहेतु भूख प्यास घाम शीत बर्षा सहत हैं तिनकी तपस्या में खोटजानिये क्योंकि पराधीन परवशकोजीवन मृतक समानहै।कहतुहैं॥

क॰ दैनो भलोसुपथ कुपथपै न दूनोभलोसूनोभलोभौनपैन खल साथकरिये। सन्तनको लघुसंग जड़कोगुरुत्वछांड़िसाधुको सहज औ असाधुकृपा डरिये॥ थोरिये सराफी न बहुत जुवाँको छांड़ि परिकै कुसंगआप बजसों सपरिये। हारिमानिलीजै पैन रारिकीजे नीचनिसों सरबस दीजै पैन परबश परिये॥

मृतक कौनको कहतु हैं कि जा सेवकको ठाकुर न चाहै। अरु कहै इततै उतजा बोलै जिन ठाढ़ौरह ऐसे अवज्ञा करि वाको मानमर्दनकरै तौहूं मूर्ख धनके हेतु पराधीन रहै। जैसे वेश्या परपुरुषके निमित्त श्रृंगारकरै तैसे मूर्खहू पढ़िगुनि परायो

आधीनहोय यातेमेरेजान सेवककेसमान मूर्ख जगत् में कोऊना-हिं। दमनककही मित्रतुम यहबात जिन कहौ। कह्यो है बड़ो जगत्करि भलो ठाकुर सेइये जासों मनकामना पूरणहोय। छत्र चमर गज अश्वआदि सबलक्ष्मी के पदार्थ मिलैं। जो न सेइये तौ कहांसों पाइये। ताते सेवा अवश्यकरिये। बहुरि करटककही हितू जो तुम कह्यो तासें हमैं कहा प्रयोजन। कह्यो है बिना समझे बूझे काहूके बीचपरे सो मरै जैसे एक बनचर मस्यो। दमनक कही यह कैसी कथाहै तहां करटक कहतुहै।

मगधदेशमें शुभदत्त नामकायस्थ तिन धर्म्मारण्य बनमेंक्रीड़ा की ठौर बनावनको आरम्भ कियो। तहां कोऊ बढ़ई काठचीरतु चीरतु वा माहिं लकरीकी कीलदै काहू कामकोगयो। अरु एक बनको बानर चपलाई करतु करतु कालवश वाहीकाठपर कील पकरिआय बैठ्यो अरु वाके अण्डकोष वा काठकी सन्धि माहिं लटकिपरे। ज्यों उनि चंचलता सों युक्तिकरि कील काढ़ी त्यों काढ़त प्रमाण अण्डकोष चपे औैर मस्यो। ताते हौं कहतुहौं कि बिन स्वारथ चेष्टा न करिये। दमनककही मित्र जो प्रधानहोय सो सब काम करै। सेवकको ऐसो बिचारनो योग्य नाहीं। करटकबोल्यो भाई आपनोकामछोड़ि औरके काममें परनो उचित नाहीं। अरु जो परै तौवैसे होय जैसेपराये काजमें परि बिचारो गदहा मास्योगयो। दमनक कही यह कैसी कथाहै। तब करटक कहतु है॥

बाराणसीनगरी माहिं कोऊ कर्पूरपाटनामधोबीरहै सो तरुण स्त्री ब्याहिल्यायो। वाकेसाथ एकदिन रातको क्रीड़ाकरि सुख नींदमाहिं सोवतुहौं। वाकेघरमें चोरपैठे। अरुताकेअँगनामें एक गदहा औकूकरहो। सोगदहा चोरनिकोदेखिकूकरते बोल्यो अरे यहतेरो कामहै कि ठाकुरको जगायदै। उनिकही अरेमेरो अकाज जिनकरतू जानतु नाहिं जुयह मोहिं खैबेको नाहिंदेतु। सुन कह्यो है जबलौं ठाकुरपै आपदा न परै तबलौं सेवक को आदर

हू न करै। पुनि गर्दभ कही सुनुरे बावरे जो काम परे मांगे सो कैसो चाकर उनि कही जो काजपरे सेवक को चाहै सो कैसो ठाकुर। सेवक औ पुत्र समान हैं इनको पोषण भरण करनो स्वामी को उचित है। गदहाबोल्यो अरे तूतो पापी है जो स्वामी को काज नाहीं करतु। अरु मेरो नाम स्वामिभक्त है। तातेजामें स्वामी जागिहै सोउपाय करिहौं। बहुरि श्वानकही रेसूरजको पीठिदै सेइये अग्नि आगेधरि तापिये अरु स्वामीसों आगे पाछे शुद्धभाव रहिये पर यह स्वामी वैसो नाहिं। अरुजो तू मेरेकाज माहिं पायँ धरैगो तोमेरो मौन तोहिंलागिहै। वाकी बात सुनि गदहा हांते उसरि धुबियाके निकटजाय कानसों मुँह लाय रेंक्यो। तब वा रजकने नींदसों चौंकि क्रोधकर गदहाको लुहांगियन मारयो। वा मारते वह मरयो॥

तातें हौं कहतु हौं कि और के अधिकार माहिं कबहूं न परिये हमारो कामतो यह है कि अहार खोजनो। पै आज हमें वाहूको शोच नाहीं क्योंकि कालिहको मांस बहुत धरयो है वाते हम अनेकदिन पेटभरि काटिहैं। दमनक कही जो तू अहारही के लिये सेवाकरतुहै तो यह भलो नांहिं राजाकी सेवाकरनो सो तो स्वारथ परमारथ के निमित्त कि जाकी सेवाते मित्रसाधनिको उपकार करिये औ शत्रुदुष्टनिको मारिये यह मनमें बासना रहति है। केवल उदरभरनके हेतु नाहीं सेवत। कह्यो है संसारमें जाके आसरे अनेकलोग जीवैं ताहीको जीवन सुफलहै। सब सेवक समान न होयँ। सेवक २ मेंहू बड़ो अन्तर है जैसे एकपांच कौड़ी की हूं अंकरो औ एकलाखनि तेहू न पाइये कहतु हैं घोड़ा हाथी काठ पाथर कपरा स्त्री पुरुष अन्न इनके मोलमोल में बड़ो भेद है। देखो कूकर थोरेई मांस हाड़ ते खफ्यो पावे तो वाहीं माहिं संतोष करि रहै। अरु सिंह आगे स्यार ठाढ़ो रहै तौहू वह वाहिछांड़ि गजकोहीं मारै। तातें हौं कहतुहौं कि जे बड़े हैं ते बड़ोईकाम करतुहैं। पुनि कूकर

पूंछहिलावै पेट दिखावै तब टूकापावै। अरु हाथी स्थान बँध्यो केते यतन उपायकरि घनेआदर सों अहारको ग्रासलेय।कह्योहै जगत्माहिं ज्ञान पराक्रम यश अहंकार सहित एकघरी जीनोहू भलो। अरु मानरहित कागकी भांति विष्ठाखाय अनेक दिन जियो तो कहा जो आपनोंहीं पेटपालि कियोतो वामनुष्य औ पशुमें कहा अंतरहै।पुनि करटककही कछु हमतुम या राजाक सेवकनाहिं।बहुरि दमनक कही भाई समयपाय मंत्री ह्वैबेको यत्न करिये बड़ो पाथर कष्टकरि उठाइये पै गिराइये सहजमें। औ आपनी प्रतिष्ठा राखिबे को उपाय सदा करिये। पुनि करटक कही बंधु तुम कछु जानतुहो कि सिंह आज काहेडरयो दमनक बोल्यो भाई यामें कहा जानबोहै पण्डित बिन कहेही जानैअरु कहेते तो पशुहू पिछाने पर जाको जो भावै सो भलो। मेरेजान तो राजाकी सेवा माहिं रहिये औ जब राजा पुकारै ह्यां कोऊ है तब कहिये महाराज कहा आज्ञा होतिहै दास बैठ्यो है। वा भांतियद पुकारै तद याही रीति उत्तर देइ। अरु जो कछु कहै सो सावधान ह्वै सुनिलेइ कह्यो न उलंघै क्षणभरसाथ न छांड़ै। परछाई की भांति संग लाग्यो रहै। करटक कही हितूकह्यो है अनअवसर नृपतिके निकट जाय तोनिरादरहोय। दमनकबोल्यो तौहू सेवक स्वामीको न छांड़ै। कह्योहै लोगनि के भय उद्यम औ अजीर्णके डर भोजन न करनो कपूतको काम है। कैसोहू अकुलीन मलीन विद्याहीन पुरुष राजाके समीपरहै तासों हित करै कहतुहैं अग्नि स्त्री राजा लता ये निकटवत् सों लगचलतु हैं। यामें संदेह नाहीं। करटक कही तू राजासों पूंछैगो तुम क्यों डरे। उनिकही प्रथम जायहौं राजाको देखिहों प्रसन्न है कै उदास। इनकही यह तू कैसे जानैगो। पुनि उनि कह्यो जो ठाकुर सेवकको दूरते आवत देखि प्रसन्नहोय आपहीते बतराय निज सेवकनि माहिंगनैं। थोरी सेवादेखि बहुत मयाकरै। दिन दिन आदरदेइ तोजानिये ठाकुरसंतुष्टहै अरु जब राजा सेवकको

आवतु देखि आंख चुरावै औ देबेको आज काल्हिकरि आशाब-ढ़ावै काहूबातमाहिं चित्त न देइ गुणमें औगुण काढ़ै तब जानिये राजा असंतुष्टहै ताते तुमचिंताकछुजिनकरो । मैं जैसे राजाको देखिहौं तैसेही बात करिहौं. कह्यो है जो सयानो मंत्री होय सो अनीतिमें नीति औ विपत्तिमें सम्पत्तिकरि दिखावै। बहुरि करटक कही भाई समयविन बृहस्पतिहू कहै तो अपमानही पावै। मनुष्यकी किन चलाई।पुनि दमनक बोल्यो अहोमित्र तुमजिन डरो। हौं बिन अवसर न कहिहौं । कह्योहै जब कोऊ कुमारगमें चलै तब वाको हितूहोय सो बिनकहे न रहै। औ समय असमय मंत्रन कहै तो मंत्रीकाहेको क्योंकि अवसरपरहीबड़ाईपाइयतुहै॥

दो० समय चूकिकर सकलनर फिरपाछे पछितात।
ना यह रहै न वह रहै रहै कहनि को बात॥

इतनीकहि फेरं दमनक बोल्यो अबजो मोहिंकहौ सो करों। करटककही जामें आपनो भलो जांनो सोकरो यह सुनिदमनक पिंगलराजाके नेरे गयो । दण्डवत्करि करजोरि सन्मुख ठाढ़ो रह्यो। तबराजाने हँसिकै कह्यो दमनक तू मोपास बहुत दिन पाछे आयो। इतनो कहि बैठायो। पुनिदमनकने राजाकी अन्तर्गतिपाय वाको भयमान जानि ऐसेकह्यो कि पृथ्वीनाथ तिहारे हमारो कामतौनाहीं। परहम सेवकहैं।हमको यह योग्यहै कि समय असमय आयो चाहै क्योंकि एकसमय दांत कान कुरेदबेको तृणहूको कामपरतुहै ताते सेवकबेलाकुबेला काज न आवै तो पाछे वहकौनकामको।यद्यपिबहुतादिनभये तुममोसोंकुछमंत्र नाहीं पूंछयो। पर मेरीबुद्धि नाहींघटी । कह्योहै जो मणि पायँ बांधिये औ कांचशिर तौहू कांचसीकांच अरु मणिसी मणि।पुनि अपमान कियेहू जाकी बुद्धि स्थिररहै सो पण्डित। यासों महाराज तुमको सदा विवेक करनो उचितहै। संसारमें उत्तम मध्यम अधम तीनप्रकारके लोगहैं। जाको जैसो देखिये ताको तैसो अधिकार सौंपिये अरु सेवककी सेवा बूझिये जो सेवककी सेवा

राजा न सूझै तो सेवक मनमाहिं महादुःखी रहै। तातै महाराज आभरण औ सेवक जहांको होय तहांहीं शोभापावे। अरु राजा मंत्री की बुद्धिते चलै तौ अनेक सेवक आवैं। कह्यो है अश्व, शस्त्र, शास्त्र, बीन, नर नारी येसब भलेके हाथ रहैं तो भले रहैं औ बुरेके हाथ बुरे। पुनि कह्यो है जो राजा सुबुद्धीपर कुमायाकरै तो वह याके निकट न रहै जो सुबुद्धी राजा के ढिग न रहै तो नीतिजाय। नीतिगये लोगदुःखीहोयँ। अरु भूपतिमया करै तो सबहीमानै नीकिबात सबको सुहाय पै मीठोबोलनो महाकठिनहै। इतेक बातैं जब दमनकने कही तब बाघराजा बोल्यो अहो दमनक तुम हमारे मंत्रीकेपुत्रहैकै हमपास कबहूं न आये। ऐसोतुम्हैं न बूझिये अब आवन कैसेभयो। दमनक कही कि महाराजहौं तुमते कछुपूंछबेको आयोहौं आपकीआज्ञापाऊं तोपूंछो। सिंहकही दमनकतुम हमते निस्संदेहपूंछो। पुनि दमनक बोल्यो महाराज तुमपानीके तीरजाय बिन नीरपियेसुचित्त है आपने स्थान पै जुआय बैठेसोताको कारण कहा। यह कृपाकरि मोहिं कहो तौ मेरेमनकी संदेहजाय। उनिकही भाई मेरेमनकी बात काहूसों कहबेकी नाहीं। पर तू मेरे मंत्रीकेपुत्र है। यातै हौं तोते कहतुहौं। तू काहूसों या बातको जिन कहियो कि जबआजहौं जलपीबेको गयो तबएक अतिभयानक शब्द सुन्यो। ताके भयको मार्‍योहांते बगादि यहां आय बैठ्योहौं। अरु जी में बिचारतुहौं कि या बनमें कोऊ महाबली जन्तु आयो है तातें या बनतें अनत जाय बसिये सो भलो। पर यहां रहनो योग्य नाहीं। यह सुनि दमनक बोल्यो महाराज कछु कहिबेकी नाहीं। वह शब्द मैंनेहूं जबते सुन्योहै तबते मारे भयके थर २ कांपतु हौं। पर मंत्रीको ऐसो न चाहिये जु पहिलेही ठौर छुड़ावे कै लरावै। औ राजनिको यह उचितहै कि आपदामें इतनेनकी परीक्षालेयँ सेवक, स्त्री, बुद्धि, बल क्योंकि इनकी कसौटी बिपत्ति है। नाहर कही मेरे मनमाहिं अतिशंकाहै। तब दमनकने निज

मनमें कह्यो कि तुमको शंका न होती तोहमसों काहेको बतराते। ऐसे मनमें समझि पुनि बोल्यो कि धर्मावतार जौलौं हम जीवत हैं तौलौं तुम भय कछु जिनकरो। हौं करटक आदि सब सेवक बुलायलेतहौं। नीतिमें ऐसो कह्योहै कि आपत्यके समयराजा आपने सबसेवकनिको बुलाय एकमतोकरि अधिकार सौंपै। इतनीकहि दमनक करटकको बुलाय ल्यायो। औराजासों मिलायो। पुनि राजाने इन दोउवनको बागे पहिराय पान दै वाभयंकी शांतिको बिदा कियो। आगे डगरमें जात करटकने दमनकसों कह्यो कि भाई तुम बिन समझे राजाको प्रसाद लियो। सोभली न करी। कहाजाने हमते वाभयको निवारणह्वैसकै कै नाहिं। कह्यो है काहूकी बस्तु बिन समुझे न लीजिये पर राजाको तोप्रसाद विशेषकर न लीजै क्योंकि जोकबहूंकाज न होय तो राजा क्रोधकरै अरु न जानिये कहादुःखदेय। ऐसेहू कह्यो है कि राजाकी दलमें लक्ष्मी बसतुहैअरु पराक्रममें यश क्रोधमें काल और सब देवतानको तेज भूपाल में है। ताते नर नरपति की आज्ञामाहिं रहै तोही भलो क्योंकि पृथ्वीपति मनुष्य रूप कोऊबड़ो देवता है। बहुरि दमनक कही मित्र तुम चुपके रहो। या बातको कारण हम जान्यो कि यह बर्द्धके बोलबेको शब्द सुनिके डर्योहै। अरु बैल कोतो हमहू मारिसकतुहैं। सिंहको वह कहा करिहै। पुनि करटक कही भाईजो ऐसीही बात है तो राजासों कहिके उनकेमनको भय काहे न दूरि कियो। दमनक कही हित यह बात प्रथमहीं नरपति ते कहीं होती तो हम तुमको अधिकार कैसे मिलतो। कह्यो है सेवक स्वामी को निश्चिंत कबहू न राखै। जो राखै तो दधिकरण बिलाव की भांति होय। यह सुनि करटक कही यह कैसी कथाहै तब दमनक कहतुहै॥

अर्बुदपर्वत की कन्दरा में एक महा विक्रम नाम सिंह रहै जब वह वहां सोवे तब एक मूसा बिलसे निकरि वाके केश

काटै। यद् वह जागै तद बिलमें भजिजाय। कह्योंहै छोटेशत्रु बड़ेनिते न मरें। वा मूषककी दुष्टता देखि बाघने निज मनमें बिचारेउ कि याकी समान को कोऊ ल्याऊं तो यह माखोजाय। नातो याके हाथते सोवन न पायहों। यह बिचारि गावँमेंजाय एकदधिकरणनाम बिलावको अतिआदरसोंल्यायो अरुराख्यो। वहहू वाकन्दराके द्वारबैठ्योरहै अरु बिलावके भयतेमूसाबिल सों बाहर न निकरै। सिंह सुख नींद सोवै। याते मूसाके डरते बाघ बिलावको अति आदरकरै। आगे कितेक दिन पाछे एक दिन दावँ पाय वा मूसाको बिलावने मारिखायो। जब सिंहने मूषकको शब्द न सुन्यो तब उनि मनमाहिं बिचारेउ कि जाके कारण याहि ल्यायोंहों सो काम तौ सिद्धि भयो। अब याहि राखिबे ते कहा प्रयोजन। बाघने ऐसे बिचार वाको अहार बन्दकियो। तबबिलाव वा ठौरते भूख्यो मरिमरि परायो। याते हौं कहतुहौं कि ठाकुरको कबहूं निचतो न राखिये॥

इतनो कहि दमनक करटकको एकरूखतरे ऊंचीठौर बैठाय कितेक जम्बुक वाके निकट राखि आप इकल्लो संजीवक के पास जायबोल्योतू कहांते आयोहै। जबउनि अपनी सर्व पूर्वव्यवस्था कही तबइनकही या बनको राजासिंहहै। तुम ह्याँ कैसेरहिहौ। पुनि भयमानहोय वृषभकही तुम काहूभाँति मेरी सहायताकरौ। बहुरि दमनक ने आपनी घातें वाहि निर्भयकरि कह्यो कि मेरो बड़ो भाई करटक राजाको मन्त्री है। प्रथम उनते तोहिं मिला-ऊंगो। पाछे राजातेहू भेंटकराऊंगो। ऐसे कहि दमनकने वा बर्द्ध को करटकके समीप लैजाय वाके पायँन परायो। तब करटकने बैलकी पीठि ठोंकिकै कहेउ अब तुम या बनमाहिं अभय चरतु फिरौ अरु काहूभांतिकी चिंता निजमनमें जिन करो। ऐसे वा-को भय मिटाय सायलै राजपौंर पर आय बैठे। कह्योहै बलते बुद्धिबड़ी। देखो बलबिन बुद्धिसों गजबश करतुहैं। पुनिसंजी-वकसों करटक कही अबतुम ह्यां बैठो। हम राजापै होय आवैं।

तबतुमहूं को लै जायँगे। इतनो कहि वे दोऊ सिंह पासगये औ प्रणामकरि करजोरि सन्मुख ठाढ़ेभये। तब राजा ने उनते अति मधुर वचनसों पूंछ्यो कि जा कार्यके लये गयेहो वाको समाचारकहो। तहां दमनक हाथजोरि नीचौ मूड़करि कहनि लाग्यो महाराज हम वाहि देख्यो। सोअति बलवंत है परहमारे समझायबेते वह आपसों मिल्यो चाहतु है हम वाहि अबहीं लै आवतुहैं। पै आप सावधान ह्वै बैठियेवाके शब्दते न डरिये। शब्द कोकारण विचारिये जैसे शब्दको कारण विचारि कुटनीनेप्रभुतापाई। राजा बोल्यो यह कैसी कथाहै। तबदमनक कहतुहै॥

श्रीपर्वतमेंब्रह्मपुर नामनगर। अरु वा पहाड़ कीचोटीपै एक घंटकरणनाम राक्षसरहै। सो वा नगरके निवासी सब जानैं क्योंकि वाको शब्द सदासुन्योकरें एकदिन नगरमेंते चोरघंटाचुराय गिरिपरलिये जातुहो ताहितहां बाघने मारिखायो अरुवह घण्टा वानरके हाथआई। जब वह बजावैं तब नगर निवासी जानैं कि राक्षस डोलतुहै। काहूदिनकोऊ वा मरे मनुष्यको देखिआयो। तिन सबतेकह्यो कि अब घण्टाकरण रिसायकै नर खानलग्यो यहमैं स्वदृष्टि देखिआयों। वाकी बातसुनि मारेभयके नगर के सबलोग भजबे लागे। तब करालानाम एककुटनीने वा घंटाके बजबेको कारण जानि राजासों जायकह्यो कि महाराज मोहिं कछुदेउ तो घंटाकरणकोमारिआऊं। यहसुनि राजाने, वाहि लाख रुपैयादिये अरु वाके मारिबेको बिदा कियो। तब वाने धन तौ निज मंदिर माहिं राख्यो अरु बहुतसी खैबेकी सामालै बनकी गैलगही। हवांजायदेखै तो एकमर्कटरूखपरबैठ्यो घंटाबजावतुहै वाहिदेखि याने एक ऊंचेपर सबसामा बिथराइदई। वह बंदरा देखतही वृक्षते कूदि ह्वांआयो। पकवान मिठाई फल मूल देखि घंटापटकि खैबेको जो उनि हाथचलायो त्यों घंटा अलगभई। तब याने घंटाले आपनी गैलगही। नगरमें आय वाने वह राजा के हाथदई अरु वह बातकही कि महाराजहौं वाहि मारिआई।

यहसुनि औ घंटादेखिराजाने वाकी बहुतप्रतिष्ठाकरी अरुनगरके लोगनहूं वाहि पूज्यो॥

तातेहौं कहतुहौं कि महाराज केवल शब्दहीते न डरिये। प्रथम वाको कारण विचारिये पुनि उपायकरिये। यह तो श्रीशिवजूको वाहनहै औ तुम पार्बतीके। याते यह तिहारोआश्रमजानि निर्भय गाजतुहै। तुमकों वाकी आगता स्वागताकरिसेवाकरनी योग्यहै क्योंकि आज वह तिहारो पाहुनो है वाकी सेवाते ईश्वर पर्वती प्रसन्न होयँगे। यहसुनि दमनकते सिंहबोल्यो कि तुम शिष्टाचारकरि वाहि मोतेमिलाओ। वहतोहमारो भ्राताहै।पुनि दमनकने संजीवक बर्द्धको पिंगल बाघसों मिलायो। दोऊ अति मिलि अधिक सुखपायो। कछुकदिनानि पाछे उनमाहिं अति प्रीति भई। आगे एकदिन सितकरणनाम सिंह राजाको भाई तहां आयो। तब संजीवकने। यह टेरिसुनायो कि महाराजआज तुमनि जो मृग मास्योहो वाको मांस कहांहै।सिंहकही भाईकरटक दमनकजानै।पुनि संजीवक बोल्यो कि महाराज तुम उनते पूंछो तो सहीहै कैनाहिं। बहुरि नाहर उत्तर दियो कि हमारेयही रीतिहै जोल्यावैं सोउठावैं। फेरिसंजीवकबोल्यो महाराज मंत्री को ऐसो न बूझिये कि जोआवै सो उठावै कैराजाकी आज्ञाबिन काहूकोदेइ।यह नीति नाहीं कह्योहै आपदाके अर्थधनराखिये। औमंत्री ऐसोचाहिये जोराजाके धनको संग्रहकरै थोरोउठावै बहुतजोरै। राजाको भंडार प्राणसमानहै। सबकोऊ धनके निमित्तराजसेवाकरतुहैं धनहीनभये घरकीनारीहू न मानै। और की तो कहाचली। या संसारमें धनहीकी प्रभुताहै। जाके पास धन सोईबड़ो। ये प्रधानके दूषण हैं अतिखरचै प्रजाकी रक्षा न करै अनीति अधर्मकरि भंडारभरै राजाके सन्मुख झूठ बोलै तो अल्पदिनीनमेंहीं राजभ्रष्टहोय क्योंकि बिनशोच विचारेकाजकरेते काज कबहूं न रहै। संजीवकने जब यह बातकही तब सितकरणबोल्यो भाई तैं इनरयारनको अधिकारीकियो सोभली

करी पर हम प्राचीनलोगनिते सुन्योहै कि ब्राह्मण क्षत्री सम्ब-न्धी उपकारी औ मित्र इनको अधिकार न सौंपिये क्योंकि ब्राह्मण धनखाय तो राजादंड न दैसकै। अरु क्षत्री जब बल पावै तब राज दबायलेय। पुनि सम्बन्धी आज्ञा न मानै। उपकारी सब तुच्छजाने। मित्रराजासम आपको गनै। ताते इनको अधिकार कबहूं न दीजिये। बहुरि ऐसेहूं कह्यो है कि चट प्रधानको नतारिये। सहज सहज निषोरिये जौं स्नानको चीर। यद् वाने याहि भरमायो तदयाहूके मनमाहिं कपटछा-यो। कहतुहैं वेश्या काकी स्त्री औ राजा कांकोमीत॥

कवित्त॥

सांप सुशील दया युत नाहर काग पवित्र औ सांचो जुआरी।
पावक शीतल पाहनकोमल रैनि अमावस की उजियारी॥
कायर धीर सती गणिका मतवारो कहा मतिवारो अनारी।
मोतियराम सुजान सुनौ किन देखी सुनी नरनाह की यारी॥

पुनि राजाबोल्यौ कि भ्राता तुम सांचकहतुहो। ये दोऊ मेरो कह्यो नाहीं मानतु और मोहिं दुखदेतुहैं। बहुरिसितकरण कही भाई कह्यो है कि अहंकार ते यशजाय कुविसनतेज्ञान आ-लस्यते धन क्रिया बिनकुल औलोभते धर्म पुनिऐसेहूकह्यो है॥

दो० आज्ञा भंग नरेन्द्र की विप्रन को अपमान।
भिन्न सेज नारीनकौं विना शस्त्र बध जान॥

अरु नीति तो यों है कि पुत्रहू कह्यो न मानै तो राजा वाहू को दंडदेय। पुनि चोर अरु लोभी प्रधानते प्रजाकी रक्षाकरि पुत्रकी भांतिपालै। अरु सुन भाई। आज मैं तेरो अन्नखायो है। तातेहौं तेरेहितकी कहतुहौं। यहसंजीवक बड़ोसाधुहै। शुभचि-न्तक औसुकृतिकी खानिहै। याते आपनो भलोचाहौ तो याहि अधिकारीकरो। यह बात राजाने भाई की सुनि संजीवकको अ-

धिकारीकियो औ दमनक करटकते अधिकार खोसलियो। तब दमनकने करटकते कह्यो मित्र अब कहाकरियो यह तो हमारोई कियो दोषहै। जैसे चित्रलिखको छत्रत कंदर्पकेतुने औ मणिके लोभते महाजनने अरु आपनी करतूतिते दूतीने दुःखपायो तैसे हमहूं आपने कियेको फलपाये। पुनि करटकबोल्यो यह कैसी कथा है तब दमनक कहतु हैं॥

कंचनपुरमें बीर बिक्रमादित्य नाम राजाहो। वाके सेवक एक नाऊको मारनलैचले। तहां कंदर्पकेतु संन्यासी अरु साहुने वाहि देख्यो। तब संन्यासीने राजाके चाकरनिसों कह्यो कि या नौआको कछु अपराधनाहीं। सेवकनि कही याको क्यों रोक-हो। पुनि संन्यासी बोल्यो कि प्रथममेरो दोष मोहिंलाग्यो। सो सुनो। सिंहलद्वीपको जंबुकेतु राजा ताको मैं पुत्रहोंअरु कंदर्प-केतु मेरो नामहै। एक दिन एकब्योपारीमेरे नगरमें आयो अरु उत्तम पदार्थ उनमोहिं आनिदिखायो। जब मैंने वासों पूछयो कि तैंने यह कहांतेपायो तब उनि प्रसंग चलायो कि महाराज हम ब्योपारीलोग समुद्रकेतीर बणिजको जातुहैं। तहां वर्षदिन सागरमेंते एक बृक्ष निकरतु है। तापै अति सुन्दरीनव्रयो-बनारत्नजटित आभूषणपहिरे एक नायका बैठीबैठी आछेआछे पदार्थ भेज२देतिहै। अरुमहाजन ब्योपारीसबलेतहैं औदेशदेश बेंचतफिरतहैं। इतनीबात जब वानेमोसों कही तब मैंवाहिसाथ लै समुद्रतीरगयो। अरुहांजाय वाहिदेखत प्रमाणसमुद्रमेंकूद्यों। कूदतही मोहिं एक कंचनको मन्दिर दृष्टिआयो। तदहोंहूंउठिवा माहिं धायो। मोको देखि वाने एकदूतीपठाई। सोचली२ मेरे ढिगआई। मैंने वासों पूंछयो यह कोहै। उनकही यह कंदर्पकेलि विद्याधरणिके राजाकी पुत्री है अरु रत्नमंजरी याको नाम है। यह बात सुनि मैंने आगेबढ़ि वाके निकटजाय अधिक सुख पा-यो। तद उनिकह्यो स्वामी स्वइच्छा ते तुमह्यां रहो पर यह चित्रलिखी विद्याधरी कबहूं मत छुइयो। आगे गंधर्व विवाहकरि हौं

वहां कितेक दिन रह्यों। एकदिनवाको कह्यो न मानि ज्यों वह विद्या में छुई त्यों उनि मोहिं एकलात ऐसी दई कि हौं मगध देशमें आनि पर्‌यो। तादिनातेवाही के वियोगमें संन्यासी भयो डोलतुहौं। आज तिहारी नगरी में आय रातहौं अहीरके घर माहिं रह्यों। सुहांदेख्यो कि वह घोस अपनी घुसायनको यार के साथ बतराति देखि क्रोधकरि थांभसों बांधि मतवारो होय सोय रह्यो। अरु जब आधी रात बाजी तब एक नायन कुटनी वाके पास आय बोली कि सुनरी तेरे विरहते वह बापुरोमरतु है वाकी दया विचारि हौं तो पै आईहौं। अबतू बिलंब जिन करै। मोहिं या थंभते बांधिजा अरु वाको भलौ मनायआ। वाकी बात सुनि उनि वैसेही करी तब अहीर जाग्यो औ वासों कहनिलाग्यो कि अब तू यार पास क्यों न जाय। जदवहन बोली तदउनि वाकी नाक उतारलई अरु मदकोमातो पुनि सोयरह्यो। इतेकमें घुसायनने आय नायनसों पूछी कि अरीकुशलहै। उनि कही बीर तू तो कुशलते आई पर मैंने ह्यां अपनी नाक गवँाई। यह सुनि ग्वालिनि आप बँधगई अरु वानेनायनको बिदादई। जब नायने अपने घर आई तब फेर घोस जाग्यो औजो कुछ वाके मुख आयो सो कहनि लाग्यो वा समय अहीरी बोली तू मेरो धनी है। मारबांधजो चांहे सोकर। और ऐसोको है जो मोहिं कलंक लगावै। मेरो कर्म औधर्म अष्टलोकपाल, चांद, सूर्य, धरती, आकाश, अग्नि, जल, पवन, रात्रि, दिन, दोऊ सन्ध्या जानति हैं। अरु प्राणी जो कर्म करतु है ताकी उनको गम्य है। अबहौं अपने धर्म सतसों कहतिहौं कि हे सूर्यदेवता जो मैं अपने सतधर्मतेहौं तो मेरी नासिकाकाटी न जनाइयो। यह बात सुनि अहीरवाके ढिग जाय देखतो नाक ज्योंकी त्यों बनी है। देखत प्रमाण वह वाके पांयनपै गिर्‌यो औ बोल्यो कि तू मेरो अपराध क्षमाकर। मैं तोहिं बिन अपराध सतायों। पुनि वह वाके कंठ लागि बोली कि स्वामी या में तिहारो कछु दोष नाहीं। यह भेरे

ही कर्मकोफल है। आगे नायन निजघर जायनाक हाथ माहिं लिये बैठीही कि भोरभये वाके भर्त्तारने पेटी मांगी। इन एक छुरावाके हाथ दियो। उनि क्रोधकरि याकी ओर फेंक्यो। तद यह पुकारी कि हाय इननिर्दयी ने मेरी नाक पै छुरामारो। याकी पुकार सुनि तुमवाहि बिन शोच बिचार किये पकरिलाये औ मारणकोलिये जातुहौ पर याको कछुअपराध नाहीं। अरु साधु महाजन मेरे संगहै। ताकी बात सुनो कि यह बारहवर्ष विदेश कमाय धनलिये अपने घर को जातु हो। सो या नगर में आय रातवेश्या के घर रह्यो। वा सामान्याने आपने द्वार पै एक काठको बैताल बनाय कल लगाय वाके मूड़पर एक रत्न जड़ि राख्यौहौ। यह साधु लोभको मार्‍यो आधीरातको उठि बैताल के निकटजाय हाथबढ़ाय ज्योंहीं रत्न लयोचाहै त्योंहीं वाकी कल छूटी वाके दोऊकर बँधे। कल छूटबेको शब्दपाय वह बारबिलासिनिंया के ढिग आय बोली कि तू मलयागिरिते मुक्तान की जो माला ल्यायो है सो मोहिं दै। नातो तोहिं भोर कोटवार के ह्यां जानोहोयगो अरु ह्यांते जीवत न फिरैगो। इतनी बात यह वाकी सुनि भय खाय आपनो सब धन वाहि दै मेरे संग आय लाग्यो है। यह बात संन्यासी ते सुनि राजा के सेवकनि न्याय विचार्‍यो औ वाहि छांड़ि वेश्याते साधुको धन दिवाय यथायोग्य दंडदै सबको छांड़िदियो। ताते हौं कहतहौं कि ज्यों उननि आपने दोषते दुःखपायो तैसे हमहूं आपने कियेको फलपायो। पर भाई करटक अब जो भई सो भई। परंतु तुम जिन शोचकरो। सुनो। जैसे मैंने इनते प्रीति कराई तैसेही अब बैरकरवायहौं। कह्योहै जे चतुरहैं ते झूंठी बातकोहूं सांचीकरि दिखावैं जैसे एकअहीर ने झूंठको सांचकरि स्वामीके देखत जारको घरते निकार्‍यो। करटक कही यह कैसी कथाहै। पुनि दमनक कहतुहै॥

द्वारकानगरीमें एक घोसकी नारि ब्यभिचारिणीही। सुकोटवार और वाके मोड़ाते रहै। एक दिन रात्रिकी बेला कोटवारके

छोहरा ते भोगकरि रहीही। ता माहिं कोटवारआय द्वारपर पुकास्थो। तब याने काकेढोटाको कोठीमें लुकाय द्वारखोलदियो अरु ताहूको भलो मनायो। इतेकमें वाको धनी आयो। तद इनकोटवारको यह सिखायो कि हौं तो बारउघारनि जातिहौं पर तुम लौठिया कांध पै धरि क्रोधकरि घरते निकरो। ता पाछे हौं बात बनाय लेउँगी। उनि वैसेहीकरी। तब अहीरने घरमेंआय आपनी स्रीते कह्यो कि आज कोटवार हमारे घरते रिसायकै क्यों गयो। अहीरी बोली कोटवार हमारे घरते क्यों रिसायगो। वाको पूत वाते रिसाय मेरेघर माहिं आय छिप्योहै। सु वह आपने मोड़ाको मोसो मांगतुहै। इतेक माहिं तुम जो आये सो तुम्हें देखि चल्यो गयो। यह कहि घुसायनने कोटवारके पुत्रको कोठी ते निकारि कह्यो कि तू कछु भय मतकरै मैं तोहिं बाहर निकारि देतिहौं। जित तेरे सींगसमाय तित चल्योजा ऐसेकहि वाहि घरते निकारि दियो। कह्यो है ॥

दो० पुरुषन ते द्विगुणी क्षुधा बुद्धि चौगुनी होय।
काम आठसाहस छगुण या बिधि तिय सबकोय॥

तातेहौं कहतहौं कामपरे जाकी बुद्धि फुरै सोई पंडित बहुरि करटक बोल्यो भाई इन दोउनमें तो अति प्रीतिहै तुम कैसे बिगारकरवायहौ। फेरि दमनक बोल्यो कि मित्र जो काज उपायते होय सो बलते न होय। जैसे एकसाँपको काहू कागने मरवायो तैसे हौंहू याहि मरवाऊंगो। करटककही यहकैसी कथाहै। तहां दमनक कहतुहै ॥

उत्तर दिशामें बिद्याधर नाम पर्वत। वहां एकतरु पर काग कागली रहैं अरु वाकी जरमें एक साँपहू। जब कागलीने अण्डादये तब सर्पने रूख पर चढ़िखाय लिये अरु अण्डानि के लालचसों नित वृच्छ पै चढ़ि वाके खौंधा में जायजाय बैठे। पुनिकागली गर्भसों भई तौ उनबायसते कहीरे स्वामी या तरु-

वरको तजि अनत जाय बसिये। तो भलो क्योंकि कह्यो है कि जाकी नारी दुष्ट मित्र शठसेवक वादी घर में नागको वास ताको मरण निस्संदेह होय। यासों ह्यांको रहनो उचितनाहीं। काककही हेप्रिये अब जिन डरै क्योंकि मैंने या नागको अधिक अपराध सह्योपर अब न सहौंगो। कागलीबोली तुम याको कहा करोगे। काग कही प्यारी जो काम बुद्धिते होय सोबलते न होय। जैसे एक शशाने बुद्धिकरि महाबली सिंहको मार्यो तैसे हौंहूं याहि बिनमारेन छांड़िहौं। कागली बोली यह कैसी कथा है तहां काग कहतुहै॥

मंदरगिरिपै दुर्दंतनाम एकसिंहहो। सोबहुतजीवजंतु मार्यो करै एक दिन बनके सब जीवनमिलि बिचारकरि आपसमें कह्यो कि यहसिंह नितआय एकजंतुखातुहै औ अनेकमारतुहै। तातै याकेपास चलिकै एकजंतु नितदेनो कहिआवैं अरु बारी बांधि पहुंचावैं। तौ भलो ऐसे वै आपसमें बतराय सिंहकेपास गये औ करजोरि प्रणामकरि मर्यादसों वाके सन्मुखठाढ़भये। इन्हैंदेखि नाहरबोल्यो तुम कहा मांगतुहौ। इननि कही स्वामी तुम आहारकेलिये नितजातुहौ अधिक मारतुहौ अल्प खातुहौ। यातै हमारीयहप्रार्थनाहै कि हम तिहारेखैबेको एकजंतु नितह्यां ही पहुंचाय जैहैं। तुम परिश्रम जिन कियोकरो। उन कही अति उत्तम। ऐसे वैबाघते बचन करिआये। आगेजाकी बारीआवै सो जाय वह खाजाय। ऐसे कितेक दिनपाछे एक बूढ़े शशाकी बारी आई तब वाने आपनेजी में बिचार्यौ कि मेरोशरीर छोटो है। यासों वाको पेट न भरैगो। तद हमारे और भाइयनको खायगो तातै हमारोकुल तौ एक दोइबारी मेंहीं पूरो करैगो। यातै आपने जीवतुही याको नाशकरों तौ भलो। यह बिचारि आपनेस्थानते उठि हरुवैहरुवै चलि वह सिंहके पास आयो तब वह याहि देखि क्रोधकरि बोल्यो। अरेतू अबेरो क्यों आयो। पुनि शशाने कर जोरि यह वचन सुनायो। स्वामी मेरो कछुदोष नाहीं। हौं चल्यो

आवतुहौं तुमपाहीं गैल माहिं दूजो सिंहमिल्यौ । तिन मोसों कह्योरेतू कित चल्योजातुहै। मैं कही कि हौं आपने स्वामी पास जातुहौं। उनकह्यो या बनकोस्वामी तो मैंहौं। और स्वामीह्यां कहांते आयो। पुनि मैं कह्यो कि आजुछुड़ाय तौ तुमको ह्यां कबहूं न देख्योहौं। इतनी बातके सुनतेही वाने क्रोधकरि मोहिंबैठायराख्यो । तदमैं वासों कह्यो कि यह सेवकको धर्म नाहीं जोस्वामी काजमैं बिलम्बकरै। तुममोहिंरोंक्यो है सु मेरो ठाकुर नैं जानैगो। बरन मेरो कह्यो झूंठमानैगो अरु निजमन में कहैगो कि यंहघरजाय सोरह्यो औ मोसों आय मिथ्या भाषतुहै। याते तुम मोहिं जनि अटकावो। हौं आपने स्वामी पास होयआऊं। वहमेरी बाट जोवतुहोयगो । तुम्हैं यह बचन दिये जातुहौं कि मैं स्वामीको कहि उलटेपायँन बगदि आवतुहौं। या बातके कहेते उन बचन बंधकरि मोहिं विदा किया तबमैं तिहारेपास आयो। स्वामी यामें मेरो कहा दोषहै। इतनी बात सुनि सिंह बोल्योअरे मेरेबन मैंऔर सिंह कहांते आयो तूमोहिं वाहि अबहीं दिखाव।मैं वाको विनमारे आजभोजन न करिहौं। ऐसे बातेंकरि वे दोऊह्वांतेचले आगे २ शशा पाछे२ सिंह। जब चलतु चलतु बनमें कितनी एकदूरपहुंचे तब शशा एककुआँके ढिग जायठाढ़ो भयो । तहां सिंहबोल्यो अरे वह तोहि रोकनिवारो कहां है शशाने उत्तर दियो कि स्वामी वह तिहारे भयतेया कूपमाहिं पैठ्यो है। इतनी सुनि सिंहने क्रोधकरि कुआं के पनघटपर जाय ज्यों जलमाहिं देख्यो त्योंवाहि वाकोही प्रतिबिम्ब दृष्टि आयो । परछाईं देखत प्रमाण वह जलमें कूद्यो औ डूबि मरयो। तब शशाने आपने स्थानपरआय सब बनवासियन को सुनायो कि हौंसिंहको मारिआयो।मैंने तिहारो जन्म जन्मको दुःख दूरिकियो।यह सुनि सबबनबासियन वाहि आशीर्वाददियो

इतनीकथाकथ कागने कागलीतेकह्यो कि हेप्रिये तू देखि जो कामबुद्धिते भयो सो बलते कबहूं न होतो ।पुनि कागली

बोली स्वामीजामें भलोहोय सो उपायकरो । तब बायसह्यांते उड़ि आगेजाय देखै तो एकराजपुत्र काहूसरोवरके तीरपै वस्त्र शस्त्र आभूषणराखि वामें स्नानकरतुहै । ताकी मोतिनकी माल यह लैउड़्यो अरु आपने खोंदापैजाय वह माल साँपके कण्ठमें डारि अलग होय बैठ्यो । याके पाछे लागे वा राजाके सेवकहू देखतु चलेआये हे । तिननि जब कागकी चोंचमें हार न देख्यो तब विन मैंते एक रूखपर चढ़्यो । ताने देख्यो कि खोड़रमेंकारो नाग वह मालापहरे बैठ्योहै । यह देखि राजाके वा किंकरने निज मनमाहिं विचार्यो कि माला तो देखी पर अब कुछ बिनउपाय हाथ न ऐहै । यासों कछु यत्नकीजै । इतनो कहि वाने सर्पको तीरनिते मारि माला राजपुत्रको ल्याय दई । तातेहौं कहतु हौं भाई उपायकिये कहा न होय । बहुरि करटक कही भाई तुम जो जानो सो करो । आगे दमनकने ह्यां ते उठि पिंगलसिंहकेपास जाय कह्यो कि महाराज यद्यपि तिहारेपास हमारो कछु काम नाहीं पर समय असमय आपके निकट हमको आवनो उचितहै कह्योहै कि जब राजा कुमार्गमें चलै तब सेवकको धर्महै जुराजा को चितायदेइ ।औ न जतावै तो सेवकको धर्मजाय । आगेराजा मानो कै जिन मानो परवाको कहनो योग्यहै । महाराज राजा भोगकरिबेको है औ सेवक सेवा करनिको । पुनि कह्यो है जो राजाको राजबिगरै तो मंत्रीको दोष ठहरै।राजाको कोऊ कछु न कहै।याते प्रधानको चाहिये आपने स्वामीके काजकष्टपाय धन तनदेइ पर राज्य न जानिदेइ । अरु जो प्रधान राजकाज बिगरतदेखि राजा सों न कहै सोकैसोसेवक । औ जो राजासमय असमय किंकरकी बात न सुनै सो कैसो ठाकुर। पिंगलबोल्यो तुम कहाकह्यो चाहतुहौ सो कहो । दमनककहनिलाग्यो पृथ्वीनाथ यह संजीवक तिहारी निन्दाकरतुहो अरु कहतुहो कि अब यह राजा प्रतापहीन भयो । प्रजाकी रक्षाकरी चाहिये । या बातमें महाराज मोहिं ऐसो समझपर्यो कि अब वह आपराज कियो

चाहतुहै। यहबातसुनि राजा चुपह्वैरह्यो। पुनि दमनक बोल्यो धर्मावतार तुम ऐसो प्रचण्ड मन्त्री कियो कि जो राजकाजको मतो तुमते न पूंछि एकाएकी आपही राज्य करनिलाग्यो। सो भलो नाहीं। जैसे चानक मन्त्री ने राजानन्दकको मारयो कहूं वैसे न होय। राजापूंछी यह कैसी कथाहै। तहां दमनककहतुहै॥

काहू देशमें नन्दक नाम राजा। वाको चानकनाम मन्त्री सो राजा वा मन्त्रीको अपने राजकाजको भारदै आप निश्चिन्तहोय आनन्द करनिलाग्यो अरु मन्त्रीराजन एकदिन वहराजा प्रधानको लारलै अहेरको गयो। बनमें जाय एकमृग देख्यो। वाकेपाछे तिननि घोड़ादपटे। तद और लोगहू झपटे पर इनके अश्वनकी समान काहूको अश्व न पहुंच्यो। पुनि सबलोग अटपटाय पाछे रहे औ वे दोऊ आगे गये। जब हिरण चपरि उनके हाथते बनमें पैठ्यो तब राजाहू घाम प्यासको मारयो घोड़ा ते उतरि एक रूखतरे बैठ्यो। निदान वह महीपति आपनो हय प्रधानको थँभाय तृषाको मारयो ह्वांते उठि जलखोजतो चल्यो कितेक दूरजाय देखै तो एकबापी निर्मलजल भरी वाहि दृष्टि परी। वह जोबतु प्रमाण प्रसन्नह्वै वामें नीर पीवन उतरयो। जलपी फिरनिलाग्यो। तो वाने एकपाथरमें यह लिख्यो बांच्यो कि राजा औ मन्त्री तेज अरु बलमें समानहों तो द्वैमेंते एकको लक्ष्मी त्यागै। यह बांचि वह पाहनपै कादा लपेटि मन्त्रीकेढिग आयो। पुनि मन्त्रीहू जलपीवन वा बावरीमेंगयो औ उनदेख्यो अरु कह्यो कि यह तो कोऊ अबहीं पाहनपै गार लथेर गयोहै। बहुरि उन पाथर धोय लिख्योपढ़ि निज मनमें कह्यो कि राजाने मोसों दुरावकियो। ऐसे समाझि पानीपी मन्त्री राजाके पासआयो। राजा सोयो। तबमन्त्रीने हन्यो। याते महाराजवौ तुमसों कहतुहों कि जो बलवान् प्रधानहोय सो आपहीको राजाकरि मानै। अरु जो राजा एकही मन्त्रीको अधिकार सौंपै तो वह गर्बकरै औ गर्बते अज्ञानहोय अज्ञानभये वाहि धर्मअधर्मकोति-

चार न रहै। कह्यो है विष मिल्योअन्न दियो दान अरु दुष्ट मन्त्री इनको निकट कबहूं न राखिये महाराज जो सेवकको धर्महो सो मैं तुमसों कहि सुनायो। आगे आपनी इच्छामाहिं आवै सो करो। संसारमें ऐसेलोग थोरेहैं जिनको राज्य औ धनकी लालसा नाहिं। ताते मैं तुमसों अब पुष्ट कहिदेतहौं कि वह तिहारो राज्य लियो चाहतुहै। आगे तुम जानो। सिंह बोल्यो संजीवक मेरो बड़ोमित्रहै। वह मेरो बुरोकबहू न चेतैगो क्योंकि जो प्रियहै सो अप्रियनहोय। कह्योहै अग्निघरजरावै तोहूंअग्नि बिन न सरै। बहुरि दमनक कही कि महाराजकोऊ कितेककरो परदुर्ज्जन औ गँवार आपनो जातीय स्वभाव नछांड़ै। ज्योंकूकरा की पूंछ तेलमसल सेंकिये तऊ टेढ़ीकी टेढ़ीरहै त्यों नीचको सन्मानकरिये। तौ हूं भलो न मानै। अरु नींबको मधुदै सींचिये प्रर वाके फल मीठो न होय। कह्यो है प्रीतम सो जो आपदा निवारे। कर्म वह जाते अपयश न होय। स्त्री अरु सेवक सो जो आज्ञाकारी रहै। बुद्धिमान् वह जो गर्ब न करै। ज्ञानीसोजो तृष्णा न राखै। पुरुष वह जो जितेन्द्रिय होय। अरु महाराज मंत्री वह जो हितकारीहोय। संजीवक तिहारो सुखदेवानाहिं यह दुःख को मूलहै। याको शीघ्रही नाशकरौ। कह्योहै जोराजा धनान्ध कामान्ध होय आपनो भलोबुरो न जानै सो इच्छामातो रहै। अरु जब अहंकार ते दुःख पावै तब मंत्रीको दोष लगावै या बातके सुनबेते सिंह ने जीमें बिचारयो कि बिन समझे बूझे काहूको दंड देनोउचित नाहीं। पुनि दमनक कही पृथ्वीनाथ संजीवक आजही तिहारे मारिबेके उद्यममें लाग्योहै। तुम वाहि बुलावो अरुभेद दुराओ। कह्योहै मंत्री औ बीजगुप्तराखिये। जो गुप्त न राखिये तो वाको फल न होय। अरु दुष्टको यह स्वभाव है कि पहले मीठी मीठी बातैं कहि मन धन हाथकरि लेइ। पाछे दुष्टताकरि वाको सर्बसु खोय देइ जैसे शकुनि ने दुर्योधनको कपट सिखाय महाभारत करवायो। पिंगल कही

यह हमारो कहाकरि है । बहुरि दमनक बोल्यो कि महाराजतुम यह जिनजानो कि हमबलवान् हैं कह्यो है समयपाय छोटोहू बड़ोकाज करै जैसे एक टिटोरने समुद्रको महाव्याकुल कियो। राजा पूंछी यह कैसी कथाहै। तब दनमक कहनेलाग्यो ॥

समुद्र के तीर एक टिटोर और टिटीहरीरहै । जब टिटीहरी गर्भसों भई तब वाने आपने स्वामी सों कह्यो कि रे स्वामी मोहिं अण्डाराखिबे को ठौरबताव। उनकही यह तौ नीकी ठौर है। पुनि टिटीहरीने कह्यो ह्यांतो समुद्रकी तुरंग तरंग आवतिहै। वह हमैं दुःखदेहै। टिटोरकही जो यह हम को दुःखदेहै तो हमहूं याको उपावकरिहैं बहुरि टिटीहरी हँसकरबोली कहां तुम और कहां समुद्र। यासों प्रथमहीं बिचारकरि काजकरो। तो पाछे दुःखनहोय। पुनि टिटोरकह्यो तुम निश्चिन्ताई सों अण्डाधरो । फेर हम समुझलें हैं यहबात सुनि वाने तहां अण्डादये अरु समुद्रहू वाकीसामर्थ्य देखिबे के लिये लहरिसोंअण्डा बहायलैगयो । तद टिटीहरी बोली-रे स्वामी अण्डा तो सागर बहाय लैगयो। अब कहा करैगो सो कर। टिटोरकही हे प्रिये तू कछु चिन्ताजनि करै। हौं अबहीं लैआवतु हौं। इतनो कहि वहसब पच्छियनको साथलै गरुड़के पासगयो अरु गरुड़ने श्री नारायणसों जाय कह्यो। श्रीनारायणजूने समुद्रको दण्डदै आज्ञाकरी विन अण्डापाछे दये । तब वह सब पच्छीसमेत अण्डालै आपने घर आयो। ताते महाराजहौं कहतुहौं कि बिन काम परे काहूकी सामर्थ्यता जानी न जाय। बहुरि राजा कही हमकैसे जानैं कि वह हमते लरिबेको आवतु है। दमनक बोल्यो महाराज वाको तौ सींगको बलहै। जब सींग साम्हने करै तब जानियो। अरु जो तुमते होसकै सो करियो ॥

इतनी बात कहि ह्यांतेउठि दमनक संजीवक बर्द्धके निकटगयो औ मुख सुखाय वाके सम्मुख ठाढ़ो भयो। तद उनि याते कुशल पूंछी। इन उत्तर दियो मित्र सेवक को काहे की कुशल क्योंकि

वाकोतौ मन रात्रिदिन चिन्ताही में रहतुहै। अरु बिशेषराजाको सेवक तौ सदा सर्ब्बदा भयमान रहतुहै। कह्यो है द्रब्यपायकानेगर्ब न कियो। संसारमें आयकाने आपदा न भुक्ती। काकोमन स्त्रीके बश न भयो। कालकेहाथकोन पस्यो राजाकाकोमित्रभयो। बेश्या काकी स्त्री भई। वैरीके फंदको न परयो। जब दमनकने ऐसी ऐसी उदासी लिये बातें कहीं तब संजीवक बोल्यो कि मित्र तुमपर ऐसी कहा गाढ़परी जो ऐसे उदास बचन कहतुहौ। तुम मोसों तो कहो। दमनक कही हितू मैं बड़ो अभागो हौं। जैसे कोऊ समुद्र माहिं बूड़त सांपको पाय न पकरि सकै न छांड़ि सकै तैसे हौंहूं एकबात है। ताहि न कहि सकौं न कहे विनरहि सकौं। क्योंकि कहौं तो राजा रिसाय औ न कहौं तो मेरो धर्म्म जाय। तातें दुःख समुद्रमें पस्योहौं। संजीवक बोल्यो मित्र जो तिहारे मनमें है सो कहो इनकही भाई हौं कहतु हौं। यह बात अप्रकट राखियो अरु जो तिहारी बुद्धि में आवै सो कीजो। क्योंकि तुम ह्यां हमारे बाहते आये यातें अपयशसों डरिआपनो परलोक सँवारबे को तुम्हें सावधान किये देतुहौं। तुम चौकस रहियो। राजाकी आज तुमपर कुदृष्टि है। उननि मोसों कह्यो कि आज संजीवकको मारि सकल परिवारको तृप्तकरिहौं। यह बात सुन संजीवक ने अति दुःख पायो। तब दमनक बोल्यो कि प्रीतम तुम दुःख जिनकरो अब जो बुद्धिमें आवै सो करो। बहुरि संजीवक कहा यह काहूने सांच कह्योहै जो कृपणके धन होय मेह ऊसरमें बर्षे सुन्दर स्त्री नीच सों रतिकरै राजा कुपात्र को बढ़ावै। इतनी कहि उनि निज मनमें बिचारयो कि यह आपसे कहतुहै कै राजाने ऐसो बिचारयोहै यों शोच पुनि मनहीं मन कहनिलाग्यो कि उज्ज्वल के संग मलीन मलीनता करि शोभा न पावै ज्यों काजरते नेत्रशोभा पावै पर काजर शोभा न पावै। तातें याकी कहा सामर्थ्य है जो यह आपते कहै। उनहीं कही होयगी। मैं तो सावधानी सों सेवाकरतुहौं। राजाने ऐसो

मेरो कहा अपराध देख्यो जो मनमैलोकियो। पुनि बूझ्यो कि याहूमें आश्चर्य नाहिं क्योंकि जैसेकोऊ देवताकोअति सेवाकरै अरु वह वाहिथोरेही दोष में भ्रष्ट करि डारै तैसे राजाहू नेक दोष में मारै। अब याकोकछु उपाय नाहिं ऐसे संजीवकने आपने मन माहिं समुझि बूझि दमनक तेकही भाई मैंने राजाको ऐसो कहा काम बिगारयो है जो उनि ऐसी बिचारी। अब हौं वाकी सेवा न करौंगो क्योंकि राजसेवा करनो महाकठिन है। जो भलो कामकरै बुरो मानै सेवा करनीं योग्य नाहीं। अरु राजा की प्रीति और लौं नाहीं रहति। कह्यो है असाधुको उपकार करनो औ मूर्खको उपदेश देनो बृथा है। पुनि जो चन्दनमें सर्प औ पानीमें सिवार आपते आप आवति है त्योंसुखमें दुःखहूआय घटतुहै।पुनि दमनक बोल्यो मित्र दुष्टजन प्रथम दूरते आवतुदेख जो आदरकरि बैठायें हितसों प्रियबचनकहै सो न जानिये किवह पाछेकहा दुष्टताकरै। कहतुहैं समुद्रतरिबेको जहाज अंधकारको दीपक गरमीको बीजना मातंगजकोअंकुश ऐसेबिधातानेसबके उपाय बनायेहैं।पर दुष्टजनके मनकोकछुयत्न न करिसक्यो।बहुरि संजीवक कही भाई हौं धान पानीको खानहारोहोय। याकेबश क्योंरहौं। कह्यो है राजाके चित्तमें मित्रभेदपरयो मिटतुनहीं। ज्यों स्फटिककोपात्रटूटि फेरि न जुरै त्योंनरपतिको मनहूं उचटि फेरि न मिलै। कहतुहैं राजाको क्रोध बज्रतुल्यहै। पर एकसमय बज्र सों बचै पै भूपाल के क्रोधसों कबहूं न बचै। ताते अब दीन होय मारखानोनीकोनाहीं बरन संग्राम करि मरनोभलो क्योंकि शूरतामें द्वोयबात। जीतै तौ सुखभोगवै औ मरै तौ मुक्तिपावै। यासों या समय युद्धकरनोही उचितहै। फेरि दमनक बोल्यो अहो मित्र तुमतेहौं कहेदेतुहौं कि जब वह कान पूछ उठाय मुखपसारै तावेर तुमते जो पराक्रम बनिआवै सो कीजो। वामें काहूभाँति कसर जिनकीजो। कह्योहै बलवन्त होय आपनो बल न प्रकाशै तौ निरादरपावै। जैसे तेजहीन अग्निको सब

कोउ उठावै तैसे निबल मनुष्यको सब सतावैं। इतनों कहिदमनक बोल्यो भाई अबहीं यह बात मन में राखो कामपरेबूझी जायगी। ऐसे कहि दमनक संजीवकसों बिदाहोय करटककेढिग गयो। तब उनिपूंछ्यो हितू तू कहा करिआयो। इनकही मैं दोउ-अनिमाहिं बैर करायआयो। पुनि करटककही यामें संदेहनाहीं। कह्यो है दुष्टजन कहा न करिसकै क्षमाते कौन पण्डितकहावै। पुनि कैसहू बुद्धिमान्होय पर असाधुकी संगतिते बिगरैही बिगरै क्योंकि दुष्टके संगते जो न होय सो थोरो जैसे अग्नि जहाँ रहै तहांई जरावै। ऐसे दोऊ बतराये पुनि दमनक पिंगलके निकट गयो। कर जोरि सम्मुख ठाढ़ो भयो अरु बोल्यो महाराज सावधानहोय बैठो पशु युद्धकरबेको आवतुहै। ज्योंहीं सिंह सँभल बैठ्यो त्योंहीं बिजार क्रोधभरयो वा वनमें बैठ्यो। पुनि जिमि वाहि देखि सिंह उठिधायो तिमियानेहू पहुंचिकै सींगचलायो। अरु दोऊ पशु यथा शक्तिलरे। निदानसिंहके हाथते बर्द्ध मारयो परयो तब सिंह पछितानि लाग्यो कि हाय मैं यह कहा कियो जो राज औ धनको लोभकरि बापुरेतृण अन्नखान वालेबिजार को मारि महापाप शिर लियो। या संसारमें धनके भागी अधिक हैं पर पाप बटावनिहारो कोऊ नाहिं। कह्योहै सिंहराजासो जो गजराज को पछारै। पुनि दमनक बोल्यो महाराज यह कहां की रीतिहै जु तुम शत्रुको मारि पछितातु हौ। राजधर्म में कह्योहै कि पिता भ्राता पुत्र मित्र जो राजलेनकी इच्छाकरै ताहि नरपति बिनमारे न रहै। जो बड़ो धर्मी होय तौहूदया न करै। पुनि ज्यों संन्यासीको क्षमा भूषणहै त्योंहीं राजाको दूषण बहुरिनीतिशास्त्र में कह्यो है दयावंतराजासर्वभच्छी ब्राह्मण कामातुरस्त्री सेवकशत्रु दुष्ट मित्र असावधान अधिकारी औगुणनाशक आदि जितने हैं तिन्हैं तत्काल त्यागिये। पुनि ऐसेहू कह्योहै कि जैसी वेश्यातैसो राजा। कहूं लोभी कहूं दातार कहूं सांचो कहूं झूठो कहूं कठिन कहूं कोमल कहूंहिंसक कहूंदयालु अरु सदा अधिक

धनजनचाहै। या भांति दमनक ने सिंहराजाको समझाय बुझाय वाको शोक मिटाय राजपाटपर बैठाय अरु पुनि आपमंत्री होय सब रांजकाज करनि लाग्यो। इतनी कथा कहि विष्णुशर्म्माने राजपुत्रनिको आशीशदई कि महाराज कुमार तिहारे शत्रुनिको मित्रभेद होय अरु मित्रनिको कल्याण ॥

अथ तृतीयकथा आरम्भ ॥

विष्णुशर्म्मा जब और कथाको आरम्भकरनि लाग्यो तब राजपुत्रनिकही अहो गुरुदेव अब विग्रह सुनिबेकी लालसाहमकोहै सो कृपाकरि सुनाइये। विष्णुशर्म्मा बोल्यो महाराज कुमार तुम शांत स्वभाव होय सुनो! हौं विग्रहकी कथा कहतुहौं एक हंस औ मोर बल बुद्धिराज प्रतापमें समानरहे। पर एक कागने विश्वासघात करि हंसको हरायो। अरु मोरको जितायो। राजकुमारनिकही यह कैसी कथाहै। तब विष्णुशर्म्मा कहनिलाग्यो॥

कर्पूरद्वीपके माहिंपद्मकेलि नाम एक सरोवरहै। काहूसमय तहां के सब पक्षिनमिलि एक हिरण्यगर्भ नाम हंसको राजा कियो। सोहां राज्यकरनि लाग्यो। कह्योहै जहां राजा न होय तहांकी प्रजा सुखसों न रहै। जैसे समुद्रमें बिन केवट नाव न चलै तैसे संसारमेंहूं राजाबिन धर्मननिभै। राजा प्रजाकी नित नित अधिकाई चाहै निज पुत्रकी समान जानै। अरु जो राजा प्रजाको पालनकरि न बढ़ावै सो जगत्में प्रतिष्ठाहू न पावै। आगे एक समय वह राजाहंस रत्नसिंहासन पर सभामाहिं बैठ्योहो। तहां कौनहूद्वीपते एक दीर्घमुख नाम बगुलाआयो औ दंडवत्करि हाथजोरि राजाहंसके सन्मुख ठाढ़ोभयो। तब राजा ने वाहि आदरकरि बैठाय पूंछ्यो कि अहो दीर्घमुख जा देशते तुम पधारे तहांके समाचार कहो। उनिकही महाराज याहिबात के लिये तोहौं तिहारे ढिग आयोहौं कि जम्बूद्वीपमें विन्ध्याचल

नाम एक बड़ो पर्वतहै। तहांके सब पक्षियन को राजा मयूरहै। सो वा ठांम बसतु है। तिनमोहिं बचननि में चतुरदेखि पूंछयो कि तू कहांते आयो औ कोहै। तब मैं कही कर्पूरद्वीपते तो मैं आयो अरु ह्वांके महाराज हिरण्यगर्भको सेवकहौं। तिहारोदेश देखिबेको ह्यां आयो हौं। तब उनि पच्छियन कही कि तिहारे हमारे देश औ राजानिमें कौन भलोहै। पुनिमैं कही कि तुम कहाकहतु हो। अरे कर्पूरद्वीप तो स्वर्ग समान अरु आज राजा हंस दूसरो इन्द्रहै। याबुरे देशमें तुम क्यों परेहो। चलो हमारेदेशमें बसो। जब यह बात मैं कही तद उनपखेरुअन मोपै अतिक्रोध कियो। कह्यो है कि जैसे सर्पको पयप्याये अधिक विषबढ़ै तैसे पण्डित को उपदेश मूर्ख के मन में न आवै बरन वह उलटो वाही को सतावै जो बानर को उपदेशदे बिचारे पक्षियन आपनो कियो आप पायो। राजा पूंछी यह कैसीकथाहै। तदबक कहनि लाग्यो।

नर्मदा नदी के तीरएक पर्वत ताके तरे एक सेमल को रूख। वापैपक्षी आपने घोंसुआ बनाय सुखसों रह्योकरैं एक बेर बर्षा काल में भादोंकी अँधियारी रात्रिसमय दामिनी दमकि दमकि घटा घिरिघिरि आई अरु बड़ी २ बूंदनि घनगरज गरज जलमूसलधार बर्षन लाग्यो। ताही कालएक बानर वा पहाड़ते भीजतुउतरि शीतको मारयोथर २ कांपतु ताही रूखतरे आय बैठ्यो वाँहि दुःखित देखि दयाकरि पच्छियनि कह्यो अरेबनचर तू देख तौ सही कि हमनि अपनी चोंचसों तृणआनि घरकियो है। तोहिंतो भगवान्ने हाथ पायँदये हैं। तैंने क्यों न घरबनायो। जो तैं घरबनायो होतो तो या समयमें सुखसों पायँपसारे सोतो यह सुनि वा मर्कट ने जान्यो कि ये पक्षी या समय निजघर में सुखसों बैठे हैं। ताही ते मो पण्डितकोमूर्ख जानि उपदेशदेतु हैं। यह समझ वह हँसकै बोल्यो अरे बर्षाबीते तुम मेरोकियो देखियो। इतनो कहि वह क्रोधकरि मष्टमारि बैठ्यो। इतेकमाहिं भोर भयो अरु मेह उबरिगयो। जब सूर्यदेवने प्रकाश कियो

तबवह वा रूखपर चढ़ि सब पच्छियन के अंडा भूमि में पटकि घोंसु आखसोटकै बोल्यो अरे मूढ़ पक्षियो जे पण्डित हैं ते कहा घर करबे को असमर्थ्य हैं। तिनको तो स्वभावही है कि घर नाहीं करत। यह वाकी बात सुनि बापुरे पखेरू मौन साधि रहे। तातेहों कहतु हों कि मूर्खको उपदेश कबहूं न दीजै। पुनि राजा बोल्यो आगे कैसी भई सो कहौ। बगुला बहुरि कहन लाग्यो महाराज पुनि उनि पक्षियन मोसों रिसायकै कह्यो अरे तेरे हंसको राजा किनकियो। मैं कह्यो रे तेरेमयूरको किन राज्य दियो। या बातके सुने ते वे मोहिं मारनको उठे तद मैं हूं आपनो पराक्रम दिखायो। कह्यो है मनुष्यको और समय शिक्षाबूझिये पर जब शत्रुलरबेको आवै तब पराक्रमही करनो उचित है। जैसे नारी को लाज आभरण है तैसे रति समय ढिठाई हू आभूषण है। राजा हंसकही जोआपनो अवसर न देखि क्रोधकरै सो अति दुःखपावै। अरु ऐसेही जो आपनी सामर्थ्य न जानि चेष्टाकरै सोऊ ज्यों आपनी सामर्थ्य नजानि बाघकोचाम ओढ़ि एक गदहा मार्योगयो बक बोल्यो यह कैसी कथाहै। तहां राजा हंसकहतुहै॥

हस्तिनापुरमें एक बिलासनाम धोबी रहै। ताके घर एक गदहा वापै बोझ लादतु लादतु जदवाकी पीठपर चांदीपरीतद वह धुबिया गदहाको रात्रि के समय बाघको चामउढ़ाय काहू यवकेखेतमें छोंड़िआयो। वा खेतको रखवारो ताहि देखतही पगयो। याही भाँति यह नित नित वाको खेतखाय२आवै। तद वा रखवारेने नाहर मारबेको यत्नकियो औ वाही खेतकीपगारके निकटभूरी कामरीओढ़ि धनुषचढ़ायआपहूकाहू झुण्डतरेदबकि रह्यो। द्वै पहर रातके समय अँधेरे में गदहा आयो औयाकीभूरी कमरियाको देखिगदहीजानि वहकामांधहोय रेंकतुधायो। पुनि रखवारेने जान्यो कि यह तौ गदहाहै पर बाघको चाम ओढ़ि आयो है। ऐसे कहि क्रोधकरि रखवारेने वाहिलोठियन लौठि-

यन मारि गिरायो। वाको प्राण गयो ताते हौं कहतहौं कि आप-नो बल विचारि काजकीजै ॥

इतनी कथा कहि पुनि राजाहंस बोल्यो आगे जो भई सो कहौ। बगुला कहनिलाग्यो महाराज उन पच्छियन मोसों कही अरे दुष्टबगुला तू हमारे देशमें आय हमारेई राजाकी निन्दाकरतुहै। इतनो कहि उनमिमोहिं चोंचनि सों मारयो अरु कह्यो अरे जैसे कुआंको दादुर कुआंही को सराहै तैसे तू है अरु तेरो राजा। यह सुदेश छुड़ाय तू हमको वा कुदेशमें जैबेको कहतुहै। ऐसेमूर्ख कह्यो है चेष्टाकरि बड़ो रूखसेइये। जो फल न मिलै तौ सीरी छाहँ बैठबेको तौहू मिलै। अरु ओछेकी संगतिते प्रभुता जैसे कलारके हाथमें दूधको बासन होय तौहू जो देखै सो कहै यामें मदिराहोगी। अरु बड़ेके नामतेहू बड़ाई पाइये जैसे चन्द्रमाके नामते शशा सुखीभये। यहसुनि मैं उनिते पूंछी यह कैसी कथाहै। पुनि उनमेंते एकपक्षी कहनि लाग्यो॥

एक समय वर्षाकाल बिनबरषे बनमें पानीकी अति खैंचभई तब ह्वांके हाथियन अपने यूथपतिसों कही स्वामी ह्यांबिनपानी प्यासकेमारे मरतुहैं। यंह सुनि गजराजने एक सरोवर पहाड़में बतायो। वाकेतीर शशा बहुतरहैं। जब गज वहां जलपीवनको गये इनके पायँनतरे बहुतसे शशा चापेगये। तब एक शिलीमुखनाम शशारह्यो वाने बिचारयो कि जो याभांति ये हाथी इत आये हैं तौ एकहू सजातीय हमारो यहां जीवतु न रहैगो। यह बात सुनि एक बिजयनाम अतिवृद्ध शशाबोल्यो अहो तुम अब भय जिनकरौ मैं या उपाधिको यत्नकरिहौं। इतनीकहि वह वहांते उठिचल्यो। औ गैलमें चलत चलत वाने मनमाहिं कह्यो कि हाथियनके निकट कैसे जैहौं। वेतौ छूवतमारैं। इतनो शोचि वह एक पर्वतपै चढ़ि दिखाई दियो अरु इनजद उनते राम राम करी तद उनमेंते एकगज गर्बकरि बोल्यो अरे तूकोहै इनकहिरे हौं चंद्रदूतहौं औ तिहारे पास आयो हौं पुनि उननिकही आ-

पने आवनको प्रयोजनकहौ। इनकहीमोहिं चन्द्रमहाराजने यह कहितुमपास पठायो है कि आजतुमनि आयहमारे या चन्द्रसागरमें पानीपियो सो तौ भली करी। पर तिहारे पायँनतरे हमारे शशाचापेगये याते हम तुमते अतिप्रसन्नभये क्योंकि हमारीओर ते शशाही या सरवरके रखवारेहैं। मैंइनकी रक्षाकरतुहौं याहीते मेरो नाम लोग शशी कहतुहैं यह सुनि गजराजबोल्यो कि भाई तू यहसांच कहतुहै। पुनिशशाने कह्यो कि यह धर्म दूतको न होय जो मिथ्याभाषै। कह्यो है दूतको कोऊमारिबेकोहू लैजाय पर वह झूठ न बोलै। ऐसे सुनि गजराज भयमानहोय बोल्यो कि आजहम इतअनजाने आयकढ़े परबहुरि न आयहैं। पुनि शशाने गजपति सों कह्यो कि तुम निज मनमें कछु जनिडरौ। हौंतिहारो अपराध चंद्रदेवसों कहिक्षमाकरायहौं। ऐसेवाको सम्बोधन करि रात्रि भये गजराजको सरके तीर लैजाय चन्द्रमा को प्रतिबिम्ब दिखाय हाथजुरवाय आप पुकारिकै बोल्यो हे चन्द्र महाराज ये बापुरेगज तिहारे सरोवर पै अनजाने आय कढ़े हैं इनको जो अपराधभयो है सो आप क्षमाकीजै। पुनि इनते ऐसो कबहूं न होयगो। इतनो कहि वाने हाथियनको बिदाकियो। औ विननिहूं जलमाहिं प्रतिबिम्ब देखि सत्यजान्यो कि चन्द्रमा सरोवरमें आयो है। ताते हा कहतुहौं कि बड़ेके नामही ते कार्य सिद्धहोय। यह सुनि महाराज पुनि मैं कही अरे हमारो राजा बड़ो प्रतापी है। यह सुनि वे पक्षी मोहिं पकरि राजा मयूरके निकट लैगये। मोसों दण्डवत्करवाय हाथजुरवाय वाके सन्मुख ठाढ़ोराखि विनपक्षियन राजासों कह्यो महाराज यह दुष्ट बगुला हमारेही नगरमें रहि हमारीही निन्दा करतु है। राजा कही अरे यहकोहै औकहांते आयोहै। पक्षियन उत्तरदियो महाराज यह कहतुहै कि हौं कर्पूरद्वीपके हिरण्यगर्भ राजाको सेवकहौं औवाही देशते आयोहौं। यह सुनि वा राजाको मन्त्रीगीध बोल्यो कि तेरेराजा को मंत्रीकोहै। मैं कही सर्वज्ञ नामकछुआ।

सोई सब राज़ काजमें प्रधानहै। गीधबोल्यो कि कह्योहै जोसंदेशी कुलवन्त युद्ध विद्यामें निपुण, धर्मात्मा, आज्ञाकारी,प्राचीन, प्रसिद्धपण्डित, गुणग्राहक, द्रव्यउपायक, उपकारी, हितकारी होय ताको राजामंत्री करै। पुनि एकसुआ बोल्यो पृथ्वीनाथ या जम्बूद्वीप के माहिं कर्पूर द्वीप है अरु ह्वां आपकोई राज है। या बातको सुनि वह राजा बोल्यो कि तू सांच कहतु है। सो हमारेही देशमें है। कह्यो है किराजा बालक उन्मत्तधनवन्त औ स्त्री ये पांचौ अनपावनी वस्तु लैनकौहू हठकरैं। पुनि मैं कही कि जो बातनहीं प्रभुताई पाइये तो हौंहू कहतुहौं कि हमारो राजा हिरण्यगर्भही सब जम्बूद्वीप को राजा है। बहुरि कीर कही यह कैसे जानिये। पुनि मैं कह्यो युद्धकियेही जानि हौ। फेरि वह राजाबोल्यो कि तू आपने राजासों जाय कह हम आवतुहैं। तब मैं कही आपनो बसीठ पठौओ। राजानेकह्यो कौनको पठाइये। मैं कही कि ऐसे कहयोहै जो स्वामिभक्त, गुणवान्,पवित्र, चतुर, ढीठ,व्यसनरहित,क्षमायुक्त,धीर, गम्भीर संदेशी पराये मनको जाननिहारो जाको उत्तर न फुरै ऐसोहोय सो दूतके योग्यहै। ताहीको भेजिये। राजा बोल्यो ऐसे तौ हमारे ह्यां बहुत हैं। परकह्यो है ब्राह्मणको पठाइये क्योंकि विप्रसत्यबक्ता औ अहंकार रहितहोतुहै। पुनि मैं कही कि महाराज प्राचीनलोगनिके मुखसुन्यो है कि निजस्वभाव कोऊनाहीं तजतु जैसेकालकूटविषने महादेवको कण्ठपायो परश्यामता न त्यागी। पुनि मैं कह्यो कि महाराज सुआको पठाइये। तबराजा मयूरने सुग्गाते कह्यो कि कीर तुम या बगुलाके संगजाओ अरु राजा हंस हमारो सँदेशो कहि आवो। शुकबोल्यो महाराजकी आज्ञा मूड़पै पर या दुष्टबककी गैलहौं न जैहौं। कह्यो है दुष्टजन के साथरहे साधुजनहू दुःखपावै जैसे रावणके समीप रहि बापुरो समुद्र बांध्योगयो पुनि ज्यों कागके संगरहिहंस औ बटेर मारी गई राजा पूंछी यह कैसी कथाहै तब शुककहनिलाग्यो महाराज

उज्जैन नगरी की गैलमें एक बड़ो पीपल को रूख। तापर एक काग अरु हंसरहै। ग्रीष्मऋतुकी दुपहरी माहिं एकबटोही घाम को मारयो वाकी छांहतरे आय शस्त्र खोल शिरकँपायसोयो जब घरीचार पाछे वाके मुखपर घामआई तब हंस दयाकरि वाके मुखपर छांहकरिबैठ्यो अरु काग दुष्टताकरि वाके मुँह पै बीटकै भाग्यो। त्योंहीं बटोही जाग्यो औ वानें हंसको तीरसे मारयो। आगे एकसमय सबपक्षी मिलि गरुड़की यात्राको चले। तामें एकबटेरहूं कागके साथचली। तहां गैलमें एक अहीर दहेंड़ीलिये जातरह्यो। सो दहेंड़ी काग जुठायभग्यो अरु बापुरी बटेर ह्वां मारीगई तातेहों कहतुहों महाराज दुष्टको संगकाहू भांतिकरनो उचित नाहीं। पुनि मैं कही भाई सुआ तुम ऐसीबात क्यों कहतुहो। हमारे तो जैसे राजा तैसे तुम। महाराज इतनो सुनि वह प्रसन्न भयो। कह्यो है मूर्खको अपराध करि स्तुति कीजै तो वह प्रसन्नहोय जैसे एक खाती स्तुति किये जार सहित स्त्रीकी खाट माथे लै नाच्यो यह सुनि राजाहंस कहीयह कैसी कथाहै। पुनि बगुला कहनि लाग्यो॥

श्रीनगरमें मंदबुद्धि नाम एक खातीरहै। सो आपनी नारी को व्यभिचारिणीजानै पर वाहि जारसमेत कबहूं न पावै। एक दिनवाने वाकेजारको पकरबेकेलिये वासों कह्यो कि आजहों गावँजातुहों। सुतीन चार दिनमें आयहों। इतनो कहि वह बाहर जाय फेरिघरमें आय खटियातरे छिपिरह्यो। वाकी स्त्रीने ताहि गावँगयो जानि निजजारको बुलायो अरु क्रीड़ाके समय कछु आहटपाय जान्यो कि यह मेरी परीक्षा लेनको खटियातरे लुक्यो है। यों जानि वह मनमें चिंतितिभई। अरु जब जारकही रमति क्योंनाहीं तब वह बोली आज मेरे घरको धनी घरनाहीं। याते मेरे भाये आज गावँ सूनो बनखण्डसों लगतुहै। पुनि जार कही जो तेरो वासों ऐसोही स्नेह है तो वह तोहिं काहे छांड़ि गयो। उनि कही अरे बावरे तू यह नाहीं जानतु सुनु। कह्यो है कि